

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अगस्त 2025

अंक 467 ● अगस्त 2025

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका



मूल्य ₹50

1



अन्तर ढूँढो
3-44

चित्र: नरेश पासवान

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में नौ से ज़्यादा अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?



रुकमक

2

अगस्त 2025

चकमक

अन्तर ढूँढो

प्रकृति: कला और जिज्ञासा के बीच

- इशिता देबनाथ बिस्वास

भैरा चौक में हाहाकार - नन्दकिशोर मेहता

बेशरम बेहया - रामकरन

वर्क फ्रॉम होम की असली उस्ताद - छिपकली

- पीयूष सेकसरिया

भूलभुलैया

क्यों-क्यों

रात में - विष्णु नागर

चित्रपहेली

मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 14

- आर एस रेशू राज, ए पी माधवन व साथी

तुम भी बनाओ - बोटल की नाव

किताबें कुछ कहती हैं...

ननकी और चोरू की दुनिया - लॉरेंस हूग

माथापच्ची

मेरा पन्ना

तुम भी जानो

छिपकली - 'दिग्गज' मुरादाबादी

2

4

8

12

14

17

18

22

24

26

28

29

28

34

36

43

44



आवरण चित्र: यान वान केसल द एल्डर ने यह पेंटिंग 'इनसैक्ट्स एंड अ स्प्रिंग ऑफ रोजमेरी' सन 1653 में बनाई थी।

सम्पादक

विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक

कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार

सुशील जोशी

उमा सुधीर

डिजाइन

कनक शशि

सलाहकार

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

वितरण

ज्ञानक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर जरूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

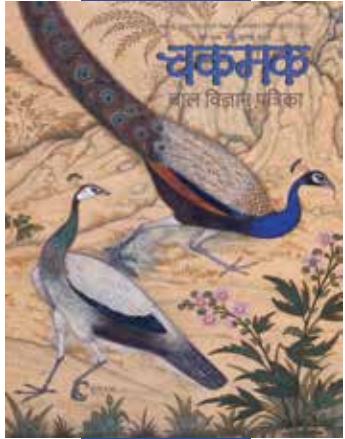
चकमक

3

अगस्त 2025

प्रकृति: कला और जिज्ञासा के बीच

इशिता देबनाथ बिस्वास



क्या तुमने चकमक के जुलाई अंक का कवर चित्र देखा या उसमें उस्ताद मंसूर पर छपा लेख पढ़ा? अगर नहीं, तो मैं यही कहूँगी कि ज़रूर पढ़ना — और मिनिएचर शैली के इस अद्भुत कलाकार की कला का रस लेना।

उस्ताद मंसूर सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में मुगल दरबार के प्रतिष्ठित चित्रकार थे। उनके कुछ चित्र — जैसे 'साइबेरियन क्रेन' और 'रंगीन डोडो' — न केवल कला की दृष्टि से बल्कि जीवविज्ञान के इतिहास में भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यही स्रोत मेरे विचारों की प्रेरणा बने।

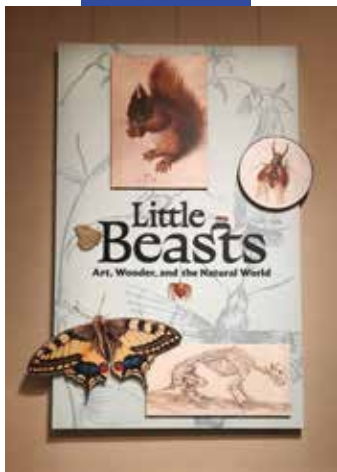
हाल ही में मैंने एक प्रदर्शनी देखी — 'लिटिल बीस्ट्स: आर्ट, वंडर एंड द नेचुरल वर्ल्ड'। यह वॉशिंगटन डी. सी. की 'नेशनल गैलरी ऑफ आर्ट' में 'स्मिथसोनियन नेशनल म्यूज़ियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री' के सहयोग से आयोजित की गई थी। इस प्रदर्शनी ने दिखाया कि यूरोप में प्राकृतिक इतिहास के शुरुआती दौर में कलाकार और प्रकृतिविद किस तरह मिलकर प्राकृतिक जगत को समझने की कोशिश कर रहे थे। इसने मुझे यह सोचने पर मजबूर किया कि कलात्मक जिज्ञासा किस तरह वैज्ञानिक खोजों की प्रेरक शक्ति बन सकती है।

सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में वैज्ञानिक खोजों, व्यापार और उपनिवेशवाद

(colonialism) के फैलाव के कारण दुनिया के दूर-दराज़ इलाकों के कीट-पतंगे, जानवर और पौधे पहली बार दर्ज किए गए। तब कैमरे या सूक्ष्मदर्शियों का प्रचलन नहीं था। कलाकारों द्वारा बनाए गए चित्र ही ज्ञान और दस्तावेज़ीकरण के प्रमुख साधन थे। इस प्रदर्शनी में ऐसे ही ऐतिहासिक चित्रों को उनके वास्तविक जैविक नमूनों के साथ प्रदर्शित किया गया था।

आज जब हम किसी हिमालयी दृश्य, गुलाबों से लदे पौधे या समुद्र की लहरों को देखते हैं, या सड़क पर किसी प्यारे पिल्ले से मिलते हैं — तो हमारी सहज प्रतिक्रिया होती है: मोबाइल निकालकर तस्वीर लेना। लेकिन उस दौर में प्रकृति को समझने और सहेजने के लिए कलाकारों की चित्रकला पर ही भरोसा किया जाता था। 1500 के दशक में प्रकृतिविद पेड़ों और प्राणियों का अवलोकन केवल वैज्ञानिक नहीं, बल्कि नैतिक और धार्मिक दृष्टिकोण से भी करते थे। वे प्रकृति को ईश्वर की अभिव्यक्ति मानते थे। इसी समय *बेस्टियरी* नामक चित्रित ग्रन्थ लोकप्रिय हुए। इनमें जानवरों और यहाँ तक कि चट्टानों के भी नैतिक अर्थों सहित विवरण मिलते थे।

इस प्रदर्शनी में मुझे सोलहवीं शताब्दी के कलाकार जोरिस हूफनागेल के कार्य ने सबसे अधिक प्रभावित किया। वे उत्तरी यूरोप के दरबारों में मिनिएचर चित्रकार थे। प्रकृति के प्रति उनकी गहरी रुचि स्पष्ट थी। उन्होंने



चकमक

4

अगस्त 2025



बेस्टियरी ऐसी चित्रपुस्तकों का संग्रह है जिनमें असली या काल्पनिक जानवरों और पौधों का वर्णन नैतिक सन्देशों के साथ किया जाता है।

पौधों और प्राणियों के बेहद बारीक और वैज्ञानिक ढंग से चित्र बनाए, जो यूरोपीय प्राकृतिक इतिहास की नींव का हिस्सा बने। उन्होंने लैंडस्केप पेंटिंग (प्राकृतिक दृश्यांकन) को भी नई ऊँचाइयाँ दीं। वे मानते थे कि “प्रकृति ही मेरी गुरु है।”

प्रदर्शनी में उनकी सबसे उल्लेखनीय कृति थी – *द फोर एलिमेंट्स*

यह वॉटरकलर में बनी 270 चित्रों की एक शृंखला है, जो चार पुस्तकों में संकलित है:

इग्निस (अग्नि) – कीट-पतंगे
टेरा (पृथ्वी) – ज़मीनी जीव
एक्वा (जल) – समुद्री जीव
एयर (वायु) – पक्षी

इग्निस को कीटों पर बनी पहली पुस्तक माना जाता है – और वह भी उस दौर की, जब सूक्ष्मदर्शी आम प्रयोग में नहीं थे। कुछ चित्र तो जीवित कीटों को देखकर बनाए गए थे, जबकि कुछ में असली कीटों के पंख लगाए गए थे। रेफ्रेंस सामग्री के अभाव में कलाकारों को यह सब कुछ देखकर, महसूस करके चित्रित करना होता था।

हूपनागेल की कुछ कृतियाँ लेपिडोक्रोमी तकनीक से बनी थीं। इस तकनीक में तितली या



इग्निस(अग्नि) — कीट-पतंगे



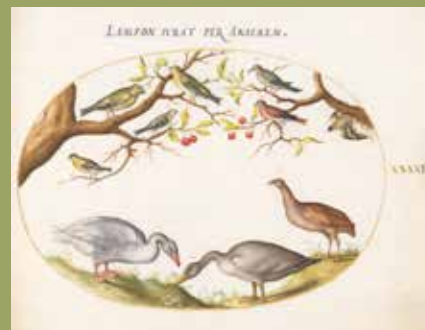
टेरा(पृथ्वी) — ज़मीनी जीव



एक्वा(जल) — समुद्री जीव



एयर(वायु) — पक्षी



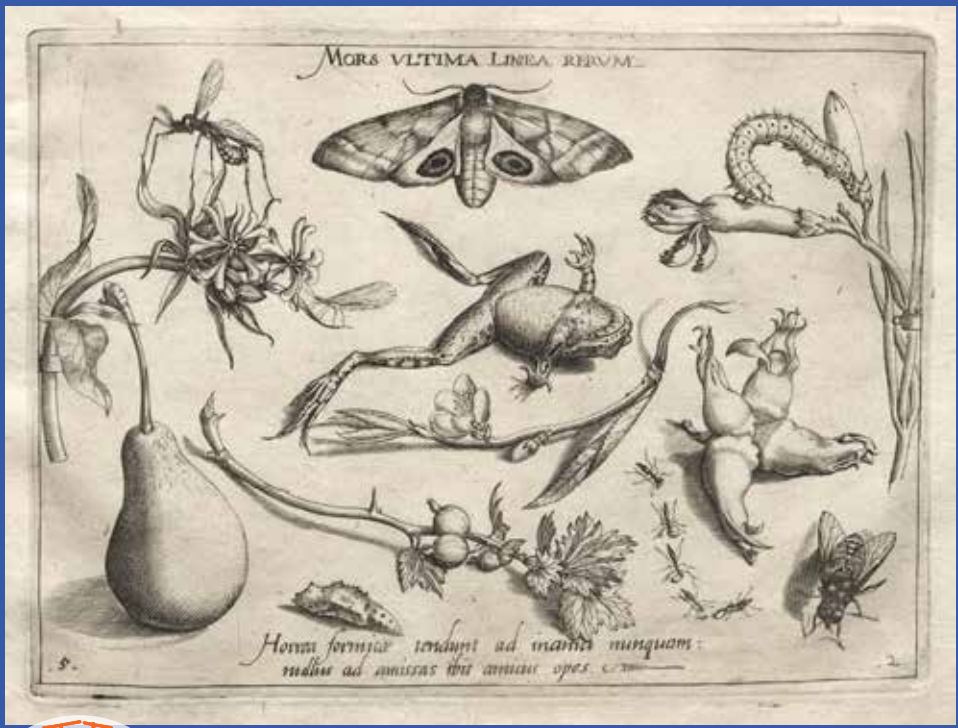


चित्र: ऊपर वाला पतंगा लेपिडोक्रोमी तकनीक से और नीचे वाला हाथ से चित्रित किया गया है।

पतंगे के पंखों को दबाकर चित्र बनाया जाता है। वे इस तकनीक को अपनाने वाले सबसे पहले कलाकारों में थे।

द फोर एलिमेंट्स हूफनागेल की निजी परियोजना थी और उनके जीवनकाल में सीमित लोगों ने ही इसे देखा। उनके चित्र केवल शाही संरक्षकों और अभिजात संग्रहकर्ताओं तक सीमित थे। लेकिन 1500 के दशक के अन्त में कलाकारों और प्रकृतिविदों ने अपने अध्ययन को आम जन तक पहुँचाने की कोशिश की। हूफनागेल ने भी अपने चित्रों को प्रिंट के रूप में प्रकाशित कराया और इसमें उनका साथ दिया उनके बेटे याकोब ने। इससे Archetypa नामक एक नई प्रिंट शृंखला बनी। इसमें 48 प्रिंट थे और जानवरों को

टैक्सिडर्मी एक प्रक्रिया है जिसमें जानवरों के शरीर को संरक्षित किया जाता है। इसमें आम तौर पर उनकी खाल को एक फ्रेम पर चढ़ाकर या फ्रेम को भीतर से भरकर तैयार किया जाता है ताकि उसे प्रदर्शनी या अध्ययन के लिए रखा जा सके। अक्सर, पर हमेशा नहीं, इसे ऐसे तैयार किया जाता है कि जानवर ज़िन्दा जैसा लगे। इसमें जानवर की खाल को सावधानीपूर्वक तैयार करना और संरक्षित करना शामिल होता है, जिसे प्रायः एक तराशे हुए ढाँचे पर चढ़ाया जाता है ताकि उसकी वास्तविक रूपरेखा को सटीक रूप से दोबारा बनाया जा सके।



समूहों में दर्शाया गया था। ये प्रिंट यूरोप भर के वैज्ञानिकों, शिक्षकों और संग्रहकर्ताओं के बीच फैल गए और धीरे-धीरे वे सामूहिक स्मृति का हिस्सा बन गए।

सत्रहवीं शताब्दी में संग्रहकर्ता अपने नमूनों के प्रिंट तैयार कराने लगे और उन्हें पुस्तकालयों तथा संग्रहालयों में टैक्सिडर्मी और किस्मों के इनसाइक्लोपीडिया जैसी पुस्तकों के साथ रखने लगे। यह सब प्राकृतिक दुनिया को देखने और समझने के नए तरीकों की ओर एक कदम था।



चित्र: प्राकृतिक इतिहास के संग्रह का एक प्रारम्भिक दृश्य

इसी युग में कैबिनेट्स ऑफ क्यूरियोसिटीज़ या वंडर-रूम्स अस्तित्व में आए – जहाँ प्राकृतिक इतिहास, भूविज्ञान, मानवशास्त्र, पुरातत्व, धार्मिक अवशेष, कलाकृतियाँ आदि सब एक साथ संग्रहित किए जाते थे। ये संग्रह सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक भी बन गए थे।

इन संग्रहों की वस्तुएँ वैश्विक व्यापार और उपनिवेशवाद के ज़रिए हासिल की जाती थीं। इनका वर्गीकरण अक्सर अस्पष्ट होता था और इनकी 'विदेशी' या 'दुर्लभ' छवि इन्हें संग्रहणीय बनाती थी। आज के विद्वान इन संग्रहों की संरचना और प्रदर्शन के औपनिवेशिक दृष्टिकोण पर पुनर्विचार कर रहे हैं।

खैर, इस विषय पर फिर कभी और बात करेंगे। फिलहाल तो इस प्रदर्शनी ने मुझे प्रकृति को एक नई दृष्टि से देखने के लिए प्रेरित किया है। अब कीट-पतंगों से पहले जैसी धिन नहीं आती – बल्कि मैं उनमें भी सौन्दर्य और संरचना देखती हूँ। अब मैं पेड़-पौधों, पक्षियों और जीवों की बारीकियों पर अधिक ध्यान देने लगी हूँ।

प्रकृति से प्रेरित चित्रों और वस्तुओं को देखने का मेरा नज़रिया बदल गया है। अब मैं सोच रही हूँ कि प्रकृति को दर्ज करने की अलग-अलग तकनीकों को आजमाया जाए।

शायद भविष्य में मैं अपने प्रयोगों को दुनिया के साथ साझा करूँ।

क्या तुम मुझे बताना चाहोगे कि तुम प्रकृति का अध्ययन किस तरह करना चाहोगे?



सन्दर्भ एवं चित्र स्रोत:

1. www.nga.gov, 2. www.wikipedia.org, 3. www.eupublishing.com/doi/10.3366/anh.2007.34.1.174 - The evolution of accuracy in natural history illustration: reversal of printed illustrations of snails and crabs in pre-Linnaean works suggests indifference to morphological detail - Author: Warren D. Allmon

राजस्थान की बिजौलिया तहसील में बसा है एक गाँव। नाम है पापड़बड़। यहाँ के लोग गाँव का नाम लेने से हिचकते हैं। कई लोगों को तो यह नाम सुहाता ही नहीं। शायद इसलिए कि भला खाने-पीने की चीज़ों पर कौन गाँव का नाम रखता है।

गाँव की गलियों में बने हैं खुरंजा वाले कच्चे रास्ते, जिन पर बिछी हैं सीमेंट की ईंटें और इन्हीं रास्तों से सटे हैं लोगों के घर। अक्सर ही यहाँ लोगों का जमावड़ा रहता है। दिन ढलते ही चहल-पहल और बढ़ जाती है। खेती, मज़दूरी से लौटे लोग घरों के बाहर काम, परिवार, दुनियादारी की तमाम बातें करते हैं। जगह की कमी के चलते बैलगाड़ियाँ, खेती-किसानी का सामान, पानी की टंकियाँ आदि सामान घरों के बाहर ही सजा दिया जाता है।

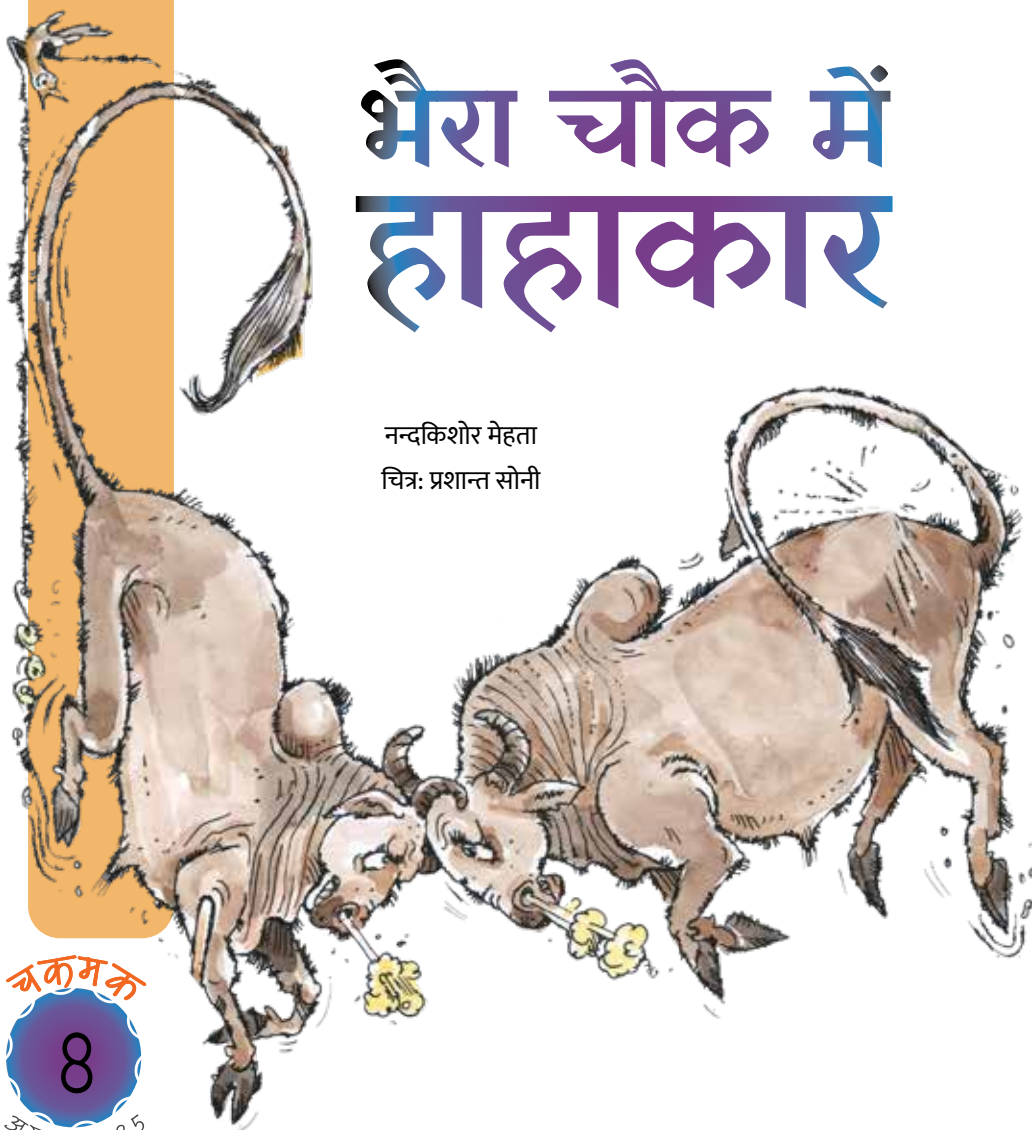
इन्हीं गलियों में से एक गली में है — भैरा चौक। गाँववाले अपनी मोटरसाइकिल इस चौक में ही खड़ी करते हैं। रोज़ाना की तरह उस दिन भी गाँववालों ने अपनी मोटरसाइकिल भैरा चौक में खड़ी कर दी। कुछ ही समय में जाने कहाँ से दो बैल आए और आपस में भिड़ गए। लड़ते-झगड़ते वे गाड़ियों के पास पहुँच गए। बस फिर क्या था बैलों की गुत्थम-गुत्था में एक के बाद एक सारी गाड़ियाँ आड़ी-तिरछी नीचे गिरने लगीं।

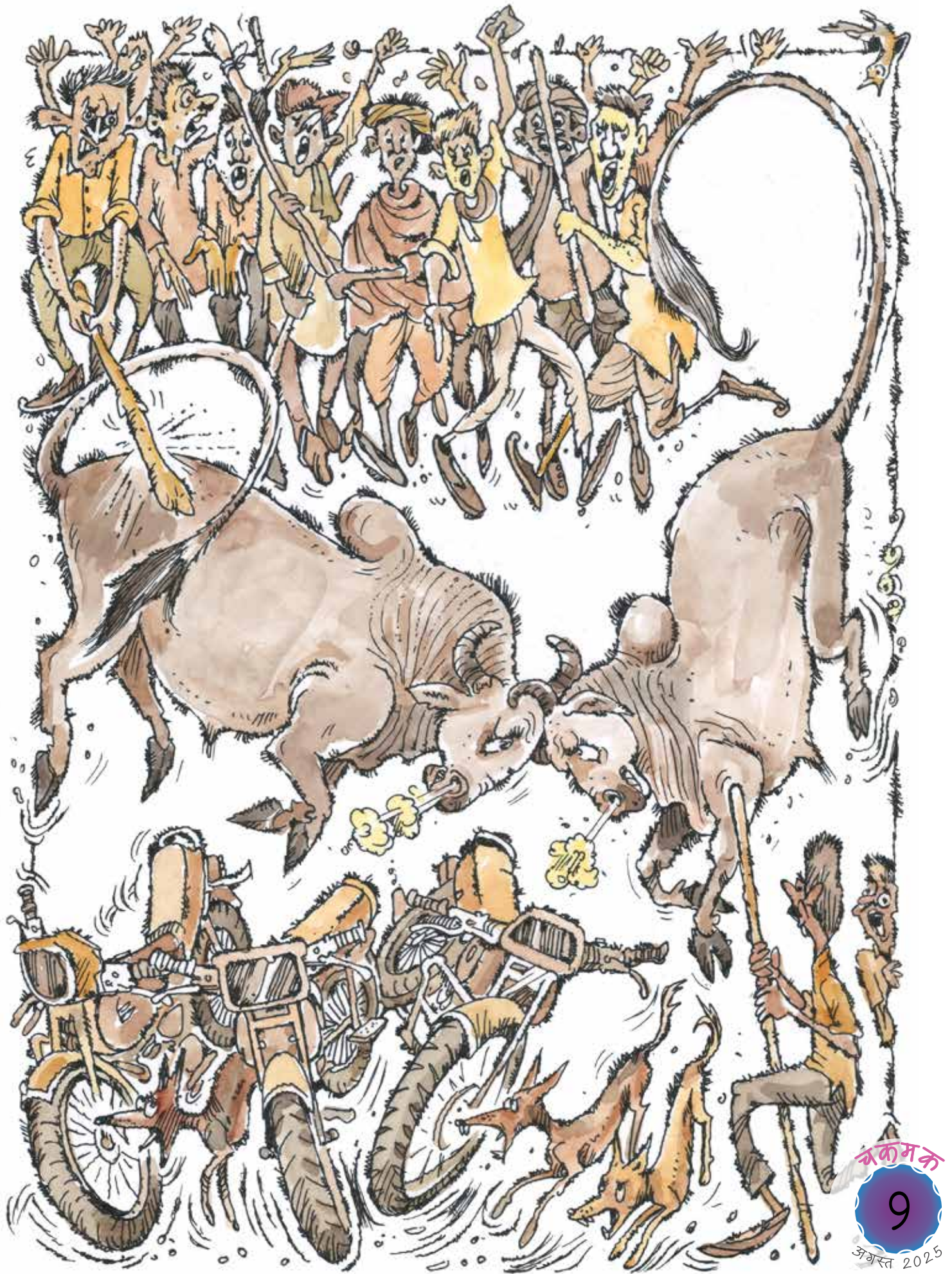
यह खबर गाँव में ऐसे फैल गई जैसे कोई बड़ा हादसा हो गया हो। ‘भैरा चौक में बैलों में लड़ाई’ की आवाज़ें चारों ओर फैल गईं। हर तरफ अफरा-तफरी मच गई। हबड़-तबड़ में लोग हाथ में डण्डे लेकर घर से दौड़े। और एक के बाद एक बैलों पर लट्ट बरसाने लगे। पर बैल रुकने का नाम ही नहीं ले रहे थे।

चलते-फिरते यह बात एक ट्रक ड्राइवर के कानों में भी पड़ी। उसने अपना ट्रक चौक के किनारे खड़ा कर ज़ोर-से हॉर्न बजाना शुरू कर दिया। लेकिन

भैरा चौक में हाहाकार

नन्दकिशोर मेहता
चित्र: प्रशान्त सोनी





इससे भी कुछ फर्क नहीं पड़ा। पों-पों-पों हॉर्न बजता रहा, पर मज़ाल है कि बैलों पर इसका असर हो जाए।

लड़ाई से तंग लोगों के मन में केवल यही बात चल रही थी कि कैसे इसे रोका जाए। भीड़ में एक मास्साब भी थे। उन्होंने सोचा कि इस लड़ाई को तो अब मेरा पालतू कुत्ता ही रोकेगा। वे दौड़कर गए और अपने पालतू कुत्ते को ले आए। फिर क्या, बैलों की लड़ाई में अब कुत्ते की भी एंट्री हो गई। भौं-भौं कर वह बैलों के ऊपर टूटा पड़ा। कुत्ते के आने से यह लड़ाई तो थमी नहीं, पर उसकी आवाज़ सुनकर आसपास के कई कुत्ते और आ गए। और एक और लड़ाई शुरू हो गई 'कुत्तों की'।

तकरीबन डेढ़ घण्टे चली बैलों की इस लड़ाई में भारी नुकसान हो गया। बात केवल गाड़ियों के टूटने-फूटने तक नहीं ठहरी, बल्कि कई लोग भी घायल हो गए। चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था। पर अभी तो इस बड़ी-सी मुश्किल का सामना करने के लिए कोई और भी आने वाला था।

अबू चाचा का गाँव में काफी रुतबा है। उनके पास है एक हष्ट-पुष्ट बकरा, जिसके चर्चे दूर-दूर

तक हैं। उन्होंने उसका नाम 'वूली' रखा है। तो अब बारी थी अबू चाचा की। उन्होंने भी अपनी समझ का पासा फेंका। और बैलों की लड़ाई रोकने के लिए मैदान में अपना बकरा उतार दिया।

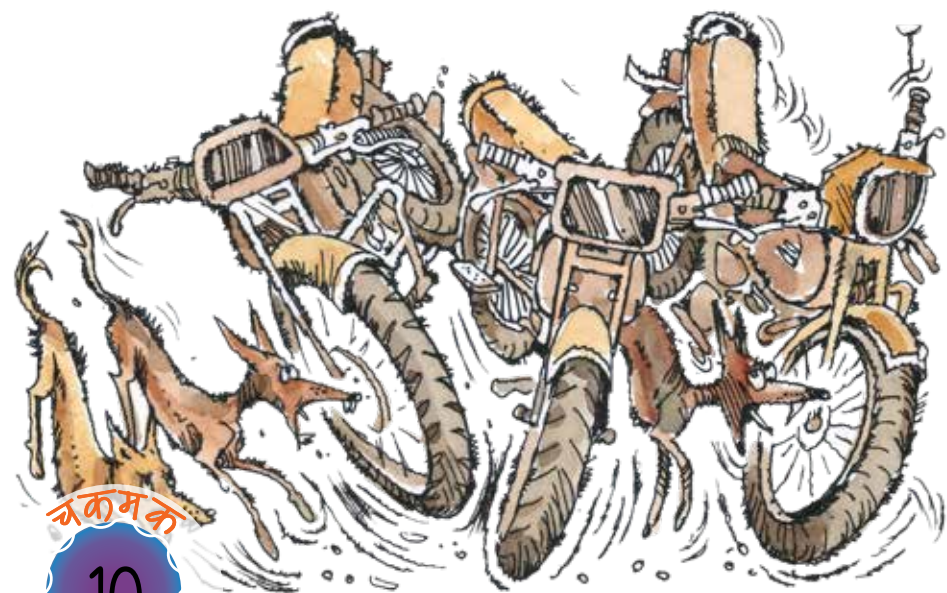
कई लोग बकरे को देख हैरान हुए। हो भी क्यों ना, हर बैल बकरे से 10 गुना बड़ा तो था ही। पर बात कुछ और ही हुई। वूली ने बैल का सामना ठीक वैसे ही किया जैसे कोई छोटा पहलवान रिंग में अपने से कहीं बड़े पहलवान का सामना करता है। वह जान लगाकर लड़ा। पर उसका यह जोश ज़्यादा देर चल न सका। आखिरकार बैलों ने कुत्तों की तरह उसे भी किनारे लगा दिया।

इस ताबड़तोड़ लड़ाई में लोगों का दिमाग ही चलना बन्द हो गया था। सब हताश हो गए थे। अब किसी के पास कोई उपाय नहीं बचा था।

तभी कुछ शरारती बच्चों ने अपनी तिकड़म लगाई। लड़ाई से बचते-बचाते वे अपने-अपने घरों से एक-एक बाल्टी पानी भरकर ले आए और बैलों पर बरसाने लगे। शायद गर्मी के मौसम में पानी डलने से बैल ठण्डे पड़ने लगे। फिर क्या था? हर तरफ से पानी की बौछारें शुरू हो गईं।

पानी की ठण्डक से बैलों का जोश भी ठण्डा पड़ गया। और कुछ ही समय में बैल वहाँ से चले गए। लम्बे चले इस घमासान पर आखिरकार अब विराम लग गया। और लोगों ने चैन की साँस ली। बच्चों की इस तरकीब की सबने खूब तारीफ की। बच्चे भी खुद को हीरो मानते हुए कन्धे उचका रहे थे।

अन्त में गाँववालों ने तय किया कि अब से कहीं भी और गाड़ियाँ खड़ी करेंगे, पर भैरा चौक पर नहीं।





बेशरम बेहया

रामकरन
फोटो: कनक शशि



चैत चटकने लगा है। गेंहूँ की फसल हरे से सुनहले होने लगी है। मेढ़ के एक तरफ से खड़े होकर देखो तो सोना लहराता है। धूप तेज़ और तेज़ हो रही है। कटाई-मड़ाई की प्रक्रिया में भूसे उड़ रहे हैं। बच्चे खेतों में गेंहूँ की गिरी बालियाँ बीनने आ रहे हैं। आपाधापी मची है। ट्रैक्टर-थ्रेसर दौड़ रहे हैं। ट्रॉलियों में अनाज-भूसा भरा रहा है। बकरियाँ मजे-से खेतों में दौड़ रही हैं। मेड़ों पर चर रही हैं। मेमने कुल्लाचे मार रहे हैं। जैसे ही थकते हैं, जाकर दूध पीने लगते हैं। बकरियाँ चरती रहती हैं। मेमने दूध पीते रहते हैं।

पोखरों का पानी कम हो रहा है। हर दिन पानी का स्तर गिर रहा है। सबसे पहले नाले सूखते हैं। फिर पोखर। धूप नमी सोख रही है। पोखरों के चेहरे फटने लगे हैं। मेंढक-मछलियाँ गायब हो गई हैं। दूर कहीं-कहीं आम और महुए के पेड़ दिखते हैं। बस वहीं थोड़ी छाँव है।

लेकिन ये खेतों के बीच मेड़ों पर कौन है — इतना हरा-भरा और फूलों से लदा हुआ। पास जाकर देखो तो आसपास पानी का नामोनिशान नहीं है। फिर भी इसका पूरा तना हरा है। पत्तियाँ भी हरी हैं। ताजगी से भरी हैं। एक भी पत्ती पीली नहीं है। बेंगनी फूल खिले हैं। तने को छूकर देखो तो वो गर्म नहीं है, ठण्डा है। हल्का नम भी है। उस पर चींटियाँ चढ़-उतर रही हैं। और कई सारी चींटियाँ भागती हुई आ रही हैं। कुछ फूलों पर, तो कुछ

पत्तों पर चहलकदमी कर रही हैं। और कुछ पत्तों के पीछे छाँव को एन्जॉय कर रही हैं। फूलों को छूकर देखो तो बहुत मुलायम और रसीले लगते हैं। एक फूल मसलो तो हाथ भीग जाएगा। तख्तियों के ज़माने में कभी-कभी इसी से पोताड़ लिया जाता था। तख्तियाँ एकदम चकाचक हो जाती थीं।

लेकिन मई के महीने में जब आसमान से आग बरस रही है। लोग बाहर निकलने से कतराने लगे हैं। ज़रा-सा चलने पर गला सूख जा रहा है। ऐसे समय में यह इतना लसलसा और खुश कैसे है? किस बात पर इतरा रहा है? क्या सूरज को चिढ़ा रहा है? किसके भरोसे अकड़ रहा है? इसकी जड़ों के नीचे क्या कोई नदी बहती है? या कोई कुआँ है? या कोई इसके अन्दर पानी का घड़ा रख गया है, जहाँ से इसे पानी मिल रहा है। ज़मीन तो पत्थरा गई है। घास सूख गई है। मगर ये मियाँ हहरा रहे हैं। मुस्करा रहे हैं।

हमारी तरफ इन्हें 'बेहया' कहते हैं, कुछ जगहों पर 'बेशरम'। न जाने किसने यह नाम दिया। खैर हमें उस पर नहीं जाना है। गौर करने वाली बात यह है कि इससे इसे कोई फर्क नहीं पड़ता। ये ज़रा-सा भी आहत नहीं होता। परेशान होने की ज़रूरत नहीं। ये मियाँ तो बेपरवाह हैं।



वर्क फ्रॉम होम की असली उस्ताद छिपकली

पीयूष सेकसरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन



कोविड ने हमें बहुत दुख दिए, बहुत नुकसान पहुँचाया। लेकिन इसने हमें काम करने का एक नया तरीका भी दिया – घर से काम करना (वर्क फ्रॉम होम – WFH)। अब WFH एक आम बात हो चुकी है। लेकिन एक जीव ऐसा करने में शुरू से ही माहिर है। यहाँ तक कि उसका प्रचलित अँग्रेज़ी नाम भी इसी पर आधारित है। ये कोई और नहीं, बल्कि हर जगह पाई जाने वाली ‘घरेलू छिपकली’ (House Gecko) है।

कुछ दिन पहले मैं पुरानी किताबों की एक अलमारी में जगह बना रहा था। तभी मोटी-मोटी किताबों के बीच के एक तिकोने कोने में मुझे एक और ‘बुक-लवर’ या यूँ कहूँ कि ‘बुकशेल्फ-लवर’ यानी घरेलू छिपकली के निशान मिले। वहाँ छोटे सिक्के के आकार के टूटे हुए अण्डों के छिलके पड़े थे। यह साफ संकेत था कि हाल ही में कुछ नन्हीं छिपकलियाँ अण्डों से निकली हैं और अब घर में घूमकर कीड़े खा रही हैं।

हम सभी किसी न किसी ऐसे शख्स को ज़रूर जानते हैं जो छिपकली से डरता है। मुझे याद है एक बार मेरी एक दोस्त ने कमरे के दरवाज़े के ऊपर एक छिपकली देख ली। और वो इतनी ज़ोर-से चीखी कि पूरा घर इकट्ठा हो गया। दरवाज़ा अन्दर से बन्द था और डर के मारे वो उसे खोल भी नहीं पा रही थी। मुझे ठीक से याद नहीं कि हमने उसे कैसे बाहर निकाला। लेकिन मुझे लगता है कि उस दिन वो छिपकली भी बुरी तरह डर गई होगी।

यह डर वाकई में छिपकली के साथ नाइन्साफी है, क्योंकि ये सबसे दिलचस्प जीवों में से एक है। इसकी काबिलियत तो स्पाइडरमैन को भी शर्मिन्दा कर दे – सीधी दीवारों पर चढ़ना, उल्टा होकर छत पर दौड़ना और वो भी गुरुत्वाकर्षण की परवाह किए बिना। कभी सोचा है कि ये गिरती क्यों नहीं?



छिपकलियों के अण्डे छोटे और लगभग गोल होते हैं। ये एक-दूसरे से और उस सतह से चिपक जाते हैं जिस पर ये दिए गए होते हैं। ये शुरू में नरम होते हैं लेकिन कुछ ही देर में सख्त हो जाते हैं।

इसका कारण है इसके पैरों पर मौजूद सूक्ष्म बाल, जिन्हें ‘सेटी’ (Setae) कहा जाता है। एक छिपकली के पैरों पर लगभग 65 लाख सेटी होते हैं। ये मिलकर इतना बल पैदा कर सकते हैं कि दो इन्सानों का वज़न भी उठा लें। छिपकने की इस अद्भुत क्षमता से प्रेरित होकर वैज्ञानिकों ने कई चीज़ें बनाई हैं, जैसे कि बेहतर मेडिकल बैंडेज, सेल्फ-क्लीनिंग टायर और यहाँ तक कि छिपकली जैसे रोबोट भी।

छिपकलियों की एक और दिलचस्प बात ये है कि वे अपनी पूँछ को अपनी इच्छा से गिरा सकती हैं। बचपन में जब हम उन्हें तंग करते थे तो उनकी अचानक काँपती हुई पूँछ देखकर डर जाते थे। और बिना पूँछ की बदहवास छिपकली जल्दी-जल्द कहीं भाग जाती थी। आम तौर पर खतरे की स्थिति में वे अपनी पूँछ गिरा देती हैं। इसका दोहरा फायदा होता है। एक तो तेज़ी-से भागना आसान हो जाता है। और दूसरा, पूँछ के अपने आप हिलते रहने से शिकारी का ध्यान भटक जाता है और भागने का मौका मिल जाता है।

लेकिन ये होता कैसे है? दरअसल छिपकलियों की पूँछ में ‘फ्रैक्चर प्लेन’ नाम की एक कमज़ोर रेखा होती है। यदि पूँछ पर कोई झटका या दबाव पड़ता है तो उस हिस्से की मांसपेशियाँ एक-दूसरे से अलग हो जाती हैं, जिससे पूँछ गिर जाती है। इस प्रक्रिया में खून बिलकुल नहीं बहता। हालाँकि पूँछ खोना छिपकली के लिए बड़े नुकसान की बात होती है, क्योंकि नई पूँछ उगाने में काफी ऊर्जा लगती है। पूँछ में वसा और पोषक तत्व भी जमा होते हैं, जो भोजन की कमी के समय काम आते हैं। इसके अलावा पूँछ छिपकली के पाँचवें पैर की तरह काम करती है और गुरुत्वाकर्षण को मात देते हुए सन्तुलन बनाने में भी मदद करती है। पूँछ की इतनी अहमियत के बावजूद छिपकली सोचती है —

“जान बची तो लाखों पाए!” गिरी हुई पूँछ का कंकाल कार्टिलेज की छड़ से बदल जाता है। और छह महीने से एक साल में एक नई पूँछ उग आती है, जो अक्सर पहले की तुलना में छोटी और हल्के रंग की होती है।

छत से उल्टी लटकी छिपकली और उसकी फड़फड़ाती पूँछ के गिरने के दृश्य ही शायद इन्सानों में छिपकली के प्रति यह डर पैदा करते हैं। बाकी के कुछ डर बिलकुल बेबुनियाद हैं। जैसे कि यह मानना कि छिपकली ज़हरीली होती है। सच तो ये है वे शान्त प्रकृति की होती हैं। अक्सर वे बस यही चाहती हैं कि उन्हें अकेला छोड़ दिया जाए और वे कीड़े-मकोड़ों को पकड़ने के अपने काम में लगी रहें। केवल प्रजनन के समय इनकी ‘चक-चक-चक’ की आवाज़ सुनाई देती है, जो घण्टों तक चल सकती है।



‘स्टिकीबॉट’ छिपकली से प्रेरित एक रोबोट है। इसे सांगवे किम, मार्क कटकोस्की और उनकी टीम ने तैयार किया था।

छिपकलियाँ ज़्यादातर रात में सक्रिय रहती हैं और दिन में अगर दिख भी जाएँ तो किसी अँधेरे कोने में भाग जाना चाहती हैं। असल में तो वो दिखना ही नहीं चाहती हैं। इसीलिए तो वो आसपास के रंग में घुल-मिल जाती हैं। ध्यान देना कि ईंटों या लकड़ियों के पास रहने वाली छिपकलियाँ गहरी धब्बेदार भूरे रंग की होती हैं, जबकि घर के भीतर की छिपकलियाँ हल्के गुलाबी या क्रीम रंग की पारदर्शी होती हैं। उन्हें सबसे ज़्यादा प्यार होता है ट्यूबलाइट और बल्ब से। इन्हें वे अपना क्षेत्र मानती हैं और दूसरी छिपकलियों से इनकी रक्षा करती हैं। हम कह सकते हैं कि ट्यूबलाइट और बल्ब भी उनका पूरा साथ देते हैं, क्योंकि उनकी ओर आकर्षित होने वाले कीड़ों को छिपकलियाँ बड़े चाव से खाती हैं।

मेंढक की तरह छिपकली की जीभ में भी लम्बी, लचीली मांसपेशी होती है। जीभ के सिरे पर चिपचिपाहट होती है, जिससे वे शिकार को पकड़ लेती हैं। कई बार वे सीधे मुँह से झपट्टा मारकर भी शिकार को दबोच लेती हैं। छिपकलियाँ सचमुच 'इन्सेक्ट कैचिंग मशीन' हैं। एक घण्टे में वे 2 से 10 कीड़े तक खा सकती हैं। और इस तरह वे हमारे घरों को कीड़ों से मुक्त रखती हैं।

सच कहूँ तो पहले मैं भी छिपकली से थोड़ा डरता था। लेकिन अब वे मुझे सुन्दर, शान्त और अनोखी लगने लगी हैं। हाल ही में मैंने घर में कुछ

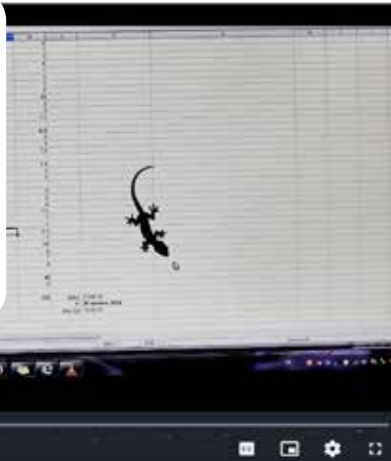
नहीं छिपकलियाँ इधर-उधर दौड़ते देखीं। मुझे लगता है कि ये वही हैं जो उस बुकशेल्फ में मिले अण्डों से निकली होंगी।

मैं शुक्रगुज़ार हूँ कि वो अब भी हमारे घर को रहने और प्रजनन के लिए सुरक्षित मानती हैं। तो अगली बार जब तुम घरेलू छिपकली को देखो तो डरना मत और सोचना कि 'वर्क फ्रॉम होम' की असली उस्ताद आई है।

यह मज़ेदार वीडियो देखो, जिसमें एक बेचारी छिपकली कम्प्यूटर स्क्रीन पर माउस पॉइंटर को कीड़ा समझकर उसका पीछा कर रही है।

कुछ मज़ेदार तथ्य

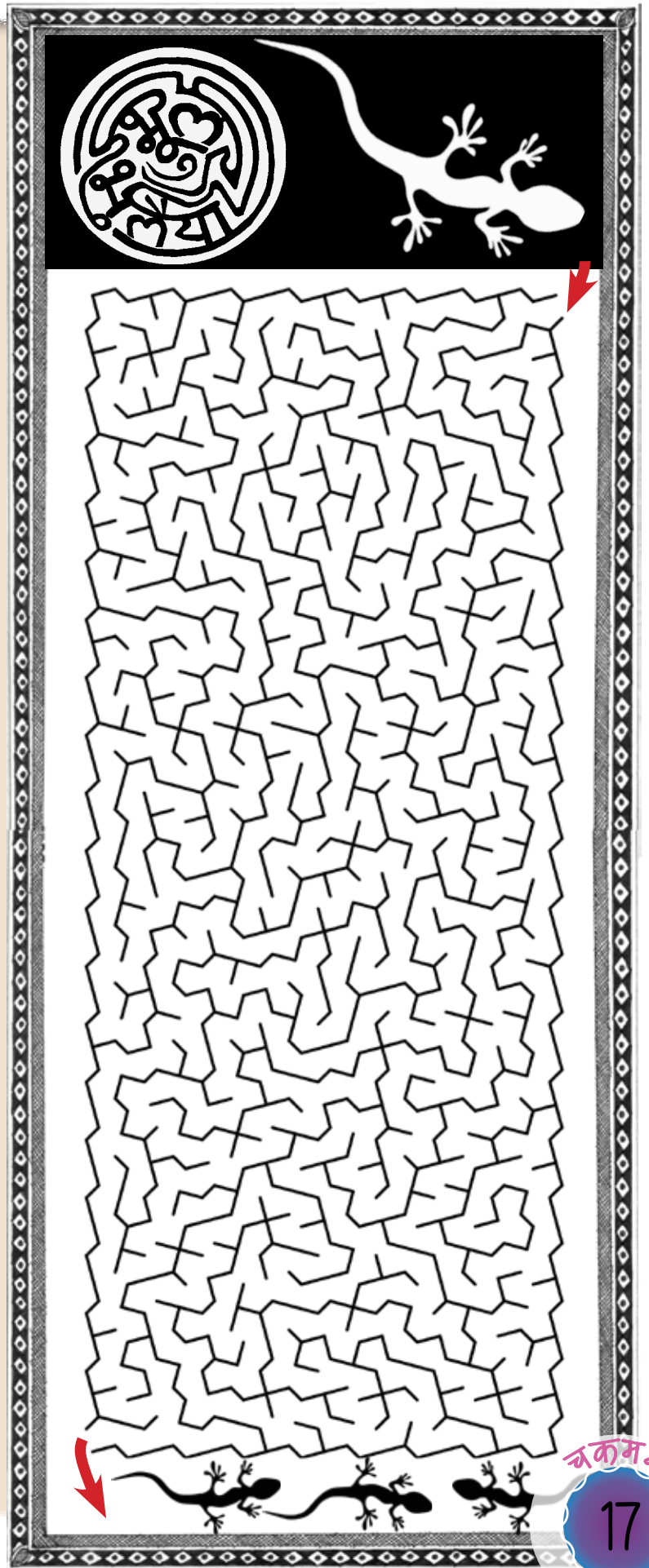
- छिपकलियाँ आर्कटिक और अंटार्कटिका को छोड़कर दुनिया भर में पाई जाती हैं – समुद्री इलाकों से लेकर उष्णकटिबन्धीय वनों, रेगिस्तानों, पहाड़ों और यहाँ तक की 3500 मीटर की ऊँचाई पर मौजूद ठण्डे रेगिस्तानों में भी।
- दुनिया भर में इनकी 2000 से अधिक किस्में पाई जाती हैं। केवल भारत में ही इनकी 170 से अधिक किस्में दर्ज की गई हैं। और हर साल इस लिस्ट में कुछ नई किस्में जुड़ती रहती हैं।
- छिपकलियाँ बहुत पुराने जीव हैं। इसका सबसे पुराना जीवाश्म बर्मी एम्बर में मिला है जो 9.9 करोड़ साल पुराना है।
- छिपकलियों की उम्र काफी ज़्यादा होती है। जंगल में वे लगभग 5 साल और पालतू बनाए जाने पर 10 से 20 साल जी सकती हैं।
- कुछ छिपकलियाँ चहचहाने, क्लिक या भौंकने जैसी आवाज़ निकाल सकती हैं।





फोटो: जॉन रिचफील्ड

- ज़्यादातर छिपकलियों की पलकें नहीं होतीं। उनकी आँखों पर एक पारदर्शी झिल्ली होती है जिसे वे अपनी जीभ से चाटकर साफ और नम बनाए रखती हैं।
- छिपकलियाँ भी रंग बदल सकती हैं। उनकी त्वचा आसपास के रंग को समझकर उसी अनुसार अपना रंग/पैटर्न बदलती है।
- कुछ छिपकलियाँ अपने पैरों की त्वचा और चपटी पूँछ की मदद से हवा में ग्लाइड कर सकती हैं।
- छिपकलियों की कई किस्मों में अण्डों का तापमान ही यह तय करता है कि उनमें से मादा निकलेगी या नर।
- आम तौर पर मादा एक बार में दो अण्डे देती है और कई बार अण्डे उसके शरीर के अन्दर साफ दिखाई देते हैं।
- एक सैकंड में छिपकली किसी दीवार पर अपनी लम्बाई से 15 गुना ऊँचाई तक चढ़ सकती है।



चकमके

17

अगस्त 2025

[illegible]

अदिति ठाकुर, दसवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

‘तेरी नाक फुखेआ (जलेआ) परे’ यह मुहावरा मुझे बहुत पसन्द है। मेरे मम्मी-पापा इस मुहावरे का प्रयोग तब करते हैं जब मैं किसी काम को गलत तरीके से करती हूँ। यह मुझे इसलिए भी पसन्द है क्योंकि मेरी दादी इस मुहावरे का बहुत इस्तेमाल करती थीं। मेरी दादी अब इस दुनिया में नहीं हैं। यह मुहावरा मुझे उनकी याद दिलाता रहता है। सच्ची बात तो यह है कि दादी मुझे डाँटने के लिए चेहरे पर मुस्कराहट लिए इस मुहावरे को बोलती थीं, लेकिन असल में वो मुझसे बहुत प्यार करती थीं।

रिहान, सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, ग्राम पाड़ा,
करनाल, हरयाणा

अक्ल पर पत्थर पड़ना, मेरे घरवाले मेरे लिए यही मुहावरा कहते हैं। क्योंकि मुझसे कोई भी काम सही नहीं होता।

नम्रता, ग्यारहवीं, रमणा विद्यालय, शोलिंगनलूर, चेन्नई, तमिलनाडु

‘दूध का जला छाँछ भी फूँक-फूँककर पीता है’ मुहावरा मुझे इसलिए पसन्द है क्योंकि इसमें ज़िन्दगी का एक गहरा सबक छिपा हुआ है। यह बताता है कि जब इन्सान एक बार ठोकर खा लेता है या कोई बुरा अनुभव हो जाता है तो आगे से वह सतर्क और समझदार हो जाता है। एक बार की गई गलती बार-बार नहीं करनी चाहिए। यह मुहावरा ज़िन्दगी भर साथ चलने वाला सबक देता है।

कबीर, तीसरी, स्वतंत्र तालीम, आशियाना सेंटर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मुझे जो मुहावरा पसन्द है, वो है ‘अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे’। एक दिन मैं अपने भैया के साथ खेल रहा था। जब वो मुझे चार बारी मारा तो मैं उसको छह बारी मारा। फिर मैं बोला कि अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे। मुझे अच्छा लगता है बोलने में ये मुहावरा।

चित्र: दिया और अर्हाना, पाँचवीं, रणथम्बौर, शिव नाडर स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

आपकी कौनसा मुहावरा अच्छा लगता है और क्यों ?
मुहावरा - ऊँट के मुँह में ज़ीरा
अर्थ - ज़रूरत से कम मिलना
क्यों अच्छा लगा - मज़ेदार तरीके में बात समझाना।
वाक्य - टीचर - बच्चे की मिनट आराम कर लो।
छात्र - मैडम ये तो "ऊँट के मुँह में ज़ीरा है"



चकमक

19

अगस्त 2025



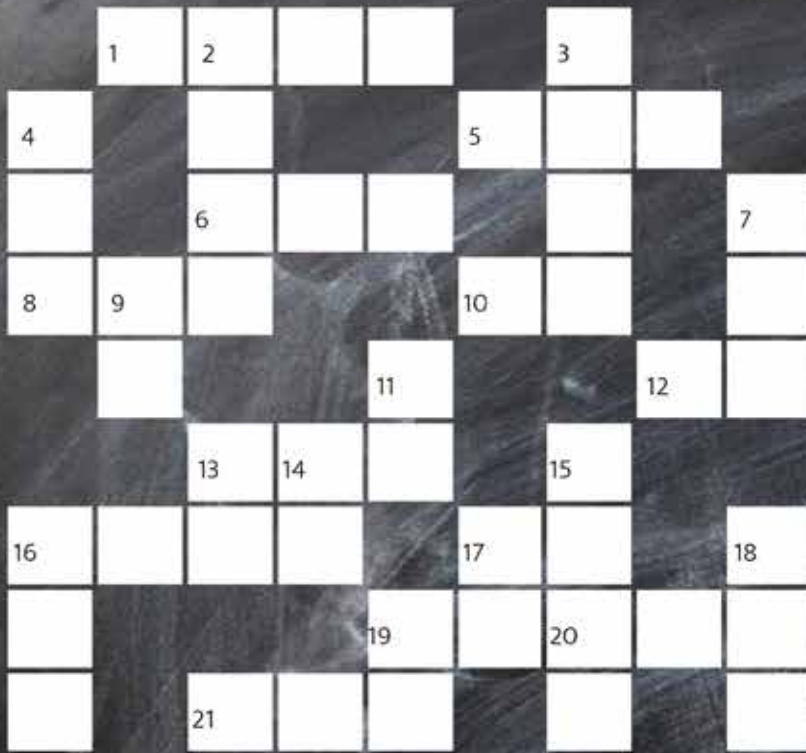
रात में

विष्णु नागर
चित्र: नरेश पासवान

पेड़ भी कुछ सोचते होंगे
आदमी के बारे में

एक बार ऐसी कल्पना करके देखिए
फिर अपने को विश्वास दिलाइए
कि हुंह, पेड़ क्या सोच सकते हैं भला
बकवास, विशुद्ध कवि-कल्पना
और फिर सोने की कोशिश कीजिए
और अगर नींद आ जाए तो सो जाइए
मैं आपसे मना तो नहीं कर रहा।





15

6



16

4

17

8

5

13

12

18

10

19

13

2

1

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

सुडोकू 87

5		9	7	1	4			
3					6		1	
9	5	3					4	
	7			4	5	8		
		8	6			3	5	1
1	9					2	3	8
8			9			5		
4	3	7			2			

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ →

ऊपर से नीचे ↓



चकमक

25

अगस्त 2025



भाग - 14

मेहमादजी कभी याउही नहीं

आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर
शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस
और अंकिला जे हिरमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

घण्टीफूल

वैज्ञानिक नाम:

टेकोमा स्टान्स

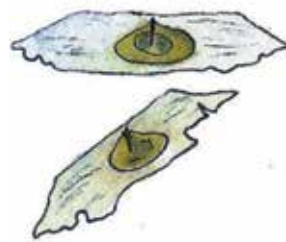
(*Tecoma stans*)

मूल: दक्षिण अमेरिका

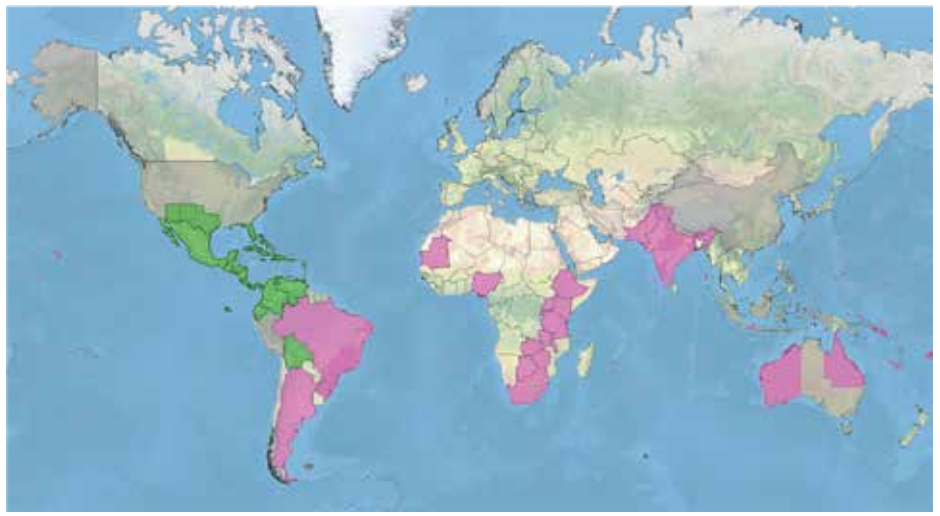
कैसे पहुँचा: आकर्षक
पीले फूलों के कारण इसे
सजावटी पौधे के रूप में
लाया गया।

अन्य देश से आए और हमारे देश में
सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की
सीरिज़ की अगली कड़ी...

घण्टीफूल उष्णकटिबन्धीय या
उपोष्णकटिबन्धीय (subtropical) क्षेत्रों में
पाई जाने वाली एक झाड़ी या छोटा पेड़
है। इसकी ऊँचाई 5 से 8 मीटर तक हो
सकती है। ये गर्म और नम वातावरण में
उगता है। ये सदाबहार पौधा है, लेकिन
अति सूखे मौसम में इसकी पत्तियाँ झड़
जाती हैं। घण्टीफूल में संयुक्त पत्ते होते हैं,
जो 10-20 सेंटीमीटर लम्बे हो सकते हैं।
इनमें 3-17 पत्रक होते हैं। पत्रकों के
किनारे दाँतेदार होते हैं। इनकी ऊपरी
सतह चटक हरे रंग की और निचली सतह
हल्की हरी होती है।



इसके चमकीले पीले, तुरही सरीखे फूल लगभग 5 सेंटीमीटर लम्बे होते हैं। ये फूल गुच्छों में खिलते हैं। एक गुच्छे में 20 फूल तक हो सकते हैं। इस पौधे में लगभग 12-22 सेंटीमीटर लम्बी और लगभग 1 सेंटीमीटर चौड़ी चपटी फलियाँ लगती हैं। फटने पर इन फलियों से कागजनुमा पंखों वाले अनेक बीज निकलते हैं। ये बीज मुख्यतः हवा के ज़रिए फैलते हैं, लेकिन पानी के ज़रिए भी ये फैल सकते हैं। ये पौधा कटी हुई जड़ों और ढ़ूँठों से भी फिर से उग सकता है।



● प्रवेश

● स्वाभाविक

● मूल जगह दर्ज नहीं

असर

घण्टीफूल का पौधा वैसे तो सूखे और पारिस्थितिक रूप से असन्तुलित क्षेत्रों जैसे रास्तों के किनारे में पाया जाता है। लेकिन ये नदी किनारे और कुछ हद तक ऐसे जंगलों में भी उग सकता है जहाँ की पारिस्थितिकी पूरी तरह असन्तुलित ना हो। वहाँ ये घनी झाड़ियों का रूप ले लेता है जिससे स्थानीय पौधों के फिर से उगने पर नकारात्मक असर पड़ता है। इस पौधे की वजह से घास के मैदानों में चारा कम हो जाता है क्योंकि जानवर इसे नहीं खाते। घण्टीफूल के पौधे कई हानिकारक कीटों के लिए वैकल्पिक मेज़बान होते हैं। यह दक्षिण अफ्रीका जैसे कई देशों में अति आक्रामक है, जबकि अन्य जगहों में इसे 'स्लीपर' खरपतवार माना जाता है, यानी एक ऐसा पौधा जो भविष्य में आक्रामक हो सकता है।

बन्दोबस्त

घण्टीफूल को पनपने से रोकने के लिए इसके अंकुरों को हाथ से उखाड़ देना चाहिए। इसके बड़े पौधों को उखाड़ने के बाद उन्हें एक बार फिर निकालने की ज़रूरत होती है क्योंकि ये पौधे कटी हुई जड़ों से फिर से उग सकते हैं। इनका रासायनिक नियंत्रण बहुत असरदार नहीं पाया गया है। दक्षिण अफ्रीका में इसके जैविक नियंत्रण के तरीकों पर परीक्षण जारी हैं।





1

मीडियम साइज़ की एक बोतल लो।
उसे आड़ी रखकर बीच में इतना बड़ा
कट लगाओ कि उसमें इसी साइज़
की दूसरी बोतल फिट हो जाए।



2

दूसरी बोतल को दो हिस्सों में काटो।
इसके तले से एक इंच ऊपर एक छोटा
छेद करो। इसमें एक स्ट्रॉ फँसाकर छेद
को टेप से बन्द कर लो ताकि पानी न
निकल पाए।



3

इस अधकटी बोतल को पहली बोतल के कट
में फँसाओ। अब पहली बोतल के तले में एक
छेद करो जिससे स्ट्रॉ बाहर निकल सके। इस
छेद पर भी टेप लगा लो ताकि पानी अन्दर न
घुस सके।



4

दो छोटी बोतलों को पहली बोतल के दोनों
तरफ गोंद व टेप से चिपका लो। ध्यान रखना
कि दोनों बोतलें विपरीत दिशा में हों ताकि
बैलेंस बना रहे।

बस हो गई तुम्हारी नाव तैयार। इसे पानी
में रखकर बीच में लगी अधकटी बोतल में
मग्गे से पानी डालो और देखो क्या होता है।

जुगाड़: प्लास्टिक की बोतलें —
दो मीडियम साइज़ की और दो
छोटी, स्ट्रॉ, गोंद और टेप

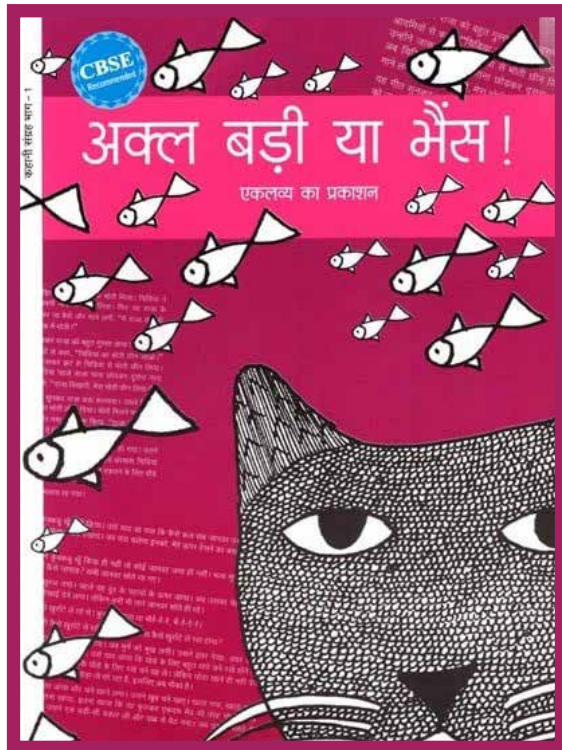


बोतल की नाव

तुम्हारी
बनाओ



किताबें कुछ कहती हैं...



मेरे स्कूल में एक किताब है — *अक्ल बड़ी या भैंस!* मुझे ये बहुत पसन्द है क्योंकि ये सुविधाजनक है। इस किताब की कहानियाँ छोटी और आसान हैं। हर कहानी से हमें कुछ सीखने को भी मिलता है। चित्र और आसान शब्दों के प्रयोग से कहानी पढ़ना मज़ेदार हो गया है।

नोट: इस किताब के चित्रों में रंग भर दिया जाता तो और मज़ा आ जाता।

अक्ल बड़ी या भैंस

संकलन: प्राथमिक शिक्षा समूह द्वारा

चित्रकार: मान सिंह

प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन

समीक्षक: सन्मय माथुर, तीसरी,

रणथम्बीर, शिव नाडर स्कूल,

नोएडा, उत्तर प्रदेश

अँल्केमिस्ट

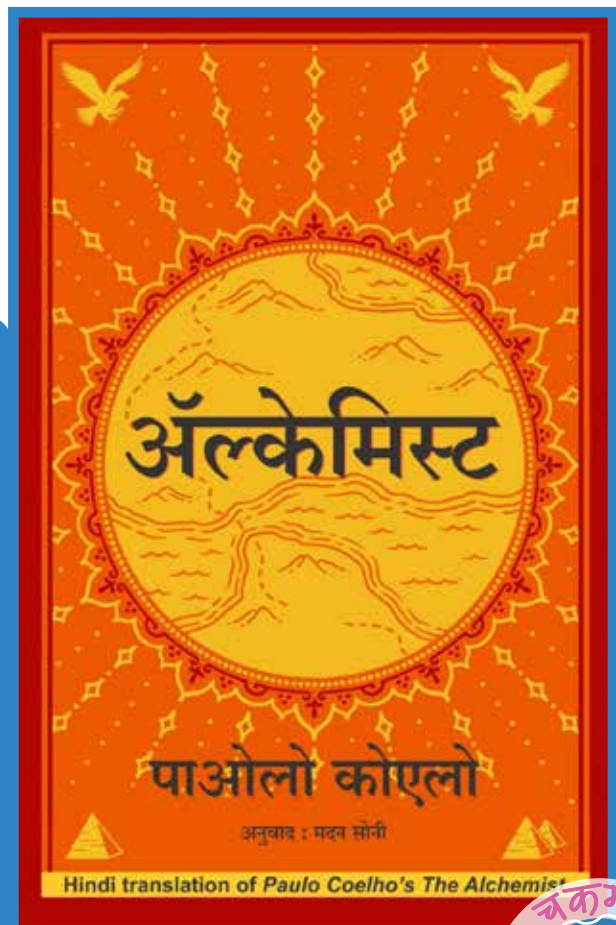
लेखक: पाउलो कोइलो

प्रकाशक: मंजुल पब्लिशिंग हाउस

समीक्षक: वरुण देव, दसवीं, किलकारी

बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

अँल्केमिस्ट पाउलो कोइलो द्वारा लिखित एक प्रेरणादायक और आध्यात्मिक उपन्यास है। यह पुस्तक एक युवा चरवाहे सैंटियागो की कहानी है, जो अपने सपनों को पूरा करने और अपने भाग्य को प्राप्त करने के लिए एक यात्रा पर निकलता है। इस पुस्तक में सपनों की शक्ति, आत्मविश्वास और आध्यात्मिक ज्ञान के महत्व को दर्शाया गया है। यह पुस्तक पाठकों को अपने सपनों को पूरा करने और अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में बदलने के लिए प्रेरित करती है। *अँल्केमिस्ट* एक ऐसी पुस्तक है जो जीवन को नए दृष्टिकोण से देखने और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है। यह पुस्तक हर उस व्यक्ति को पढ़नी चाहिए जो अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाना चाहता है।



ननकी और चोरू की दुनिया

लॉरेंस ह्यूग

चित्र: नन्दिनी लाल

अनुवाद: सुशील जोशी

अब तक तुमने पढ़ा...

ननकी एक असाधारण बच्ची थी। बचपन से ही उसे चित्र बनाना बेहद पसन्द था। वह जहाँ-तहाँ चित्र बनाया करती — आटे से, कोयले से, पेंसिल-चॉक आदि से। वह हर चीज़ को रंगों और आकृतियों में देखती थी। जब उसके स्कूल की एक शिक्षिका ने उसे शहर ले जाकर पढ़ाने की पेशकश की, तो पूरा गाँव बिफर पड़ा। “शादी कर दो”, “ज़्यादा उड़ रही है” जैसी बातें होने लगीं। इनसे तंग आकर ननकी अकेले ही जंगल की ओर दौड़ पड़ी।

अब आगे...

तीसरे दिन, जब धूप हल्की पड़ने लगी और ननकी बहुत थका हुआ महसूस कर रही थी, तभी उसे पेड़ों के बीच कलकल करती एक नदी दिखाई दी। नदी में गोल-गोल चट्टानें थीं। दूसरे किनारे पर मैदान-सा था। जब उसकी नज़र ऊपर ढलान की ओर पड़ी तो उसे एक-दूसरे पर टिकी और भी विशाल चट्टानें दिखाई दीं। उनमें से एक चट्टान के निकले हुए हिस्से पर एक पत्थर छत की तरह टिका था। “यदि मैं नदी को पार करके चट्टानों पर चढ़ जाऊँ, तो वहाँ सो सकती हूँ।” ननकी ने सोचा।

उसने चप्पल उतारी, सलवार के पाँएचे ऊपर मोड़े और दुपट्टे को कई बार गर्दन पर लपेट लिया। फिर वह एक पत्थर से दूसरे पर कूदती गई। नंगे पैरों को पत्थर मुलायम और गर्म महसूस हो रहे थे।

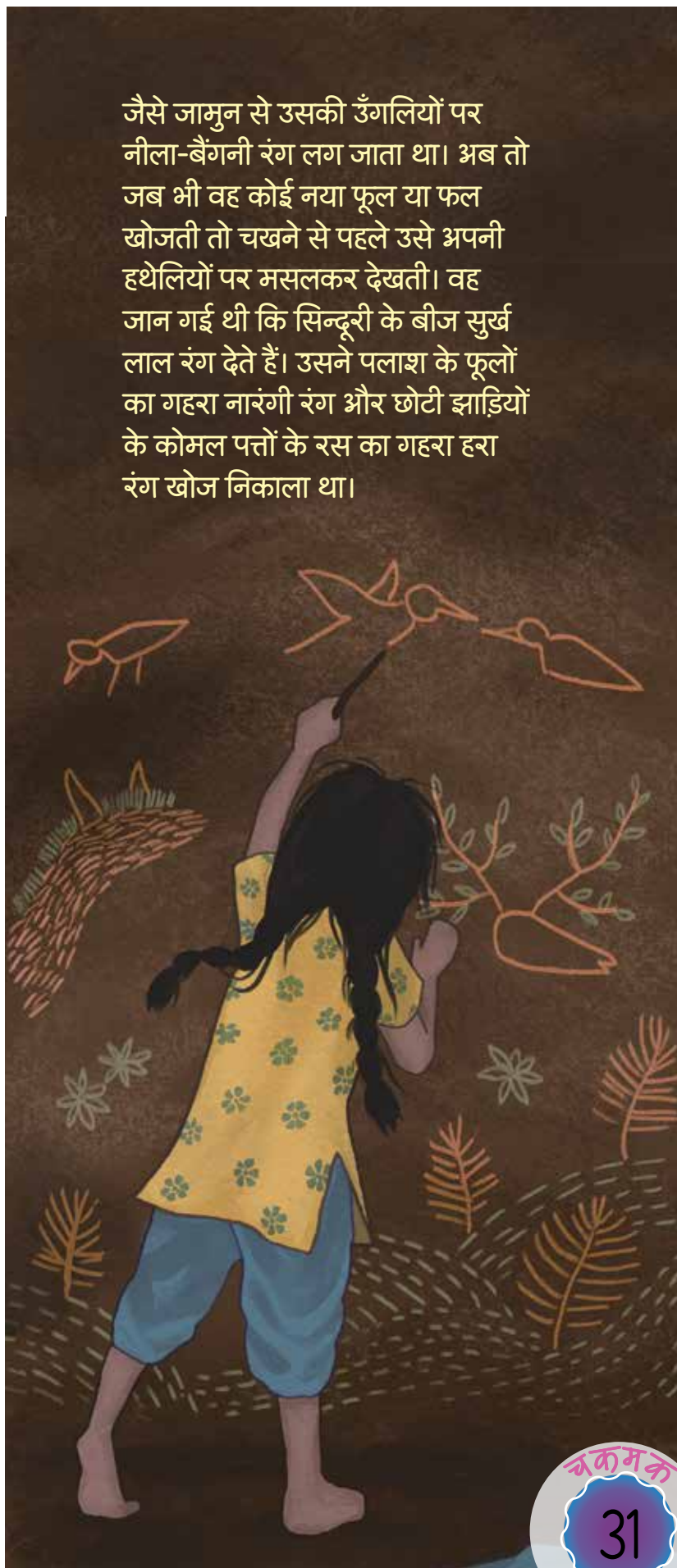
मँझधार में पहुँचकर वह अगले पत्थर पर छलाँग लगाने ही वाली थी कि तभी पीछे झाड़ियों में ज़ोर की खड़खड़ाहट हुई। डर के मारे उसका सन्तुलन बिगड़ गया और वह सीधे नदी में जा गिरी। जिस किनारे से वह अभी आई थी, वहाँ एक चीतल खड़ा उसे घूर रहा था। उसकी चप्पल धार के साथ बह गई।

पूरी तरह भीग चुकी ननकी किसी तरह किनारे पर पहुँची। उसने अपने कपड़े निचोड़े और चट्टानों के ढेर पर चढ़ने लगी। नंगे पैर होने के कारण अब चढ़ना आसान हो गया था। वहाँ उसे एक उथली गुफा नज़र आई। वह उसकी ओट में बैठ गई। भूख से बेहाल ननकी की आँखों के सामने माँ का चेहरा उभर आया — चूल्हे के पास बैठी, कढ़ाही के नीचे आग सुलगाते हुए। और उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।

धीरे-धीरे वह उस गुफा में बस गई। सुबह वह नहाने और पानी पीने के लिए नदी पर जाती। फिर जंगली फल-बेरियाँ वगैरह खोजती। नाश्ते के बाद वह चित्र बनाना शुरू करती। उसकी चॉक जल्दी ही घिस गई। चूँकि वह आग जला नहीं सकती थी, इसलिए कोयले का तो सवाल ही नहीं उठता था। ऐसे में उसने चित्र बनाने के लिए नदी किनारे की गीली रेत का इस्तेमाल किया। ब्रश के लिए उसने टहनियाँ ढूँढ लीं।

उसने देखा कि कुछ बेरियाँ उठाते समय उसकी उँगलियाँ रंग जाती थीं। जैसे जामुन से उसकी उँगलियों पर नीला-बैंगनी रंग लग जाता था। अब तो जब भी वह कोई नया फूल या फल खोजती तो चखने से पहले उसे अपनी हथेलियों पर मसलकर देखती। वह जान गई थी कि सिन्दूरी के बीज सुर्ख लाल रंग देते हैं। उसने पलाश के फूलों का गहरा नारंगी रंग और छोटी झाड़ियों के कोमल पत्तों के रस का गहरा हरा रंग खोज निकाला था।

जैसे जामुन से उसकी उँगलियों पर नीला-बैंगनी रंग लग जाता था। अब तो जब भी वह कोई नया फूल या फल खोजती तो चखने से पहले उसे अपनी हथेलियों पर मसलकर देखती। वह जान गई थी कि सिन्दूरी के बीज सुर्ख लाल रंग देते हैं। उसने पलाश के फूलों का गहरा नारंगी रंग और छोटी झाड़ियों के कोमल पत्तों के रस का गहरा हरा रंग खोज निकाला था।



इस तरह जंगल में उसका जीवन चलता रहा। नदी के ऊपर की चट्टानें चित्रों से पटी थीं; चित्र जो पत्थर की बनावट के हिसाब से बदलते थे। कहीं कोई गड़ढा परछाई बन जाता, तो कहीं किसी सपाट किनारे पर पंजा उभर आता। अमूर्त चित्र उन जानवरों की आकृतियों के साथ घुल-मिल जाते थे जो उसने जंगल में देखे थे या जिनकी कल्पना उसने रात में जागते हुए की थी। कुछ आकृतियाँ तो मात्र उसके बेचैन सपनों में ही पनपी थीं – पेड़ों जैसा शरीर और स्तनधारियों के सिरों वाले जानवर, पंजों वाले फूल, पानी से उगते पंख। इस दुनिया में इन्सानों का नामोनिशान नहीं था।

जब ननकी अपने काम से नाखुश होती तो अपने दुपट्टे का सिरा पानी में भिगोकर लकीरों को मिटा देती और फिर से शुरू हो जाती। पैटर्न आपस में गुँथ जाते, रंग एक-दूसरे पर चढ़ते और बदलते चले जाते। वह तब तक चित्र बनाती रहती जब तक कि अँधेरा न हो जाता।

उसकी उँगलियों से असीम ऊर्जा बहती थी और पत्थरों में जैसे जान आ जाती थी।

एक दिन जब वह नदी में तैरने के बाद भूखी घर लौटी, तो उसने देखा कि सुबह तोड़े गए फल गायब हो चुके थे। केले के पत्ते पर बस उस आम की गुठली बची थी, जो उसने रात को खाने के लिए रखा था। लेकिन गुफा में तो कोई नहीं था। अगली शाम को भी यही हुआ। सुबह से रखा फल शाम होने तक नदारद हो गया था।

ननकी को बहुत गुस्सा आ रहा था, खासकर इसलिए क्योंकि वह भूखी थी। अगले दिन उसने नदी पर जाने का नाटक किया और सागौन के एक पेड़ के पीछे छिप गई। वहाँ छिपे-छिपे वह ऊबने ही लगी थी कि गुफा के मुहाने की झाड़ियों में कुछ हलचल हुई। और एक पंजा प्रकट हुआ, फिर दूसरा दिखा, और अन्त में एक बन्दर की थूथन नज़र आई। वह दबे पाँव वहाँ पहुँची तो देखा कि बन्दर उसके फलों के खज़ाने को चबा रहा है।



बन्दर की गर्दन के आसपास एक लाल पट्टा लिपटा हुआ था। “क्या तुम भी भागकर आए हो?” ननकी ने पूछा। बन्दर थोड़ा पीछे हटा और फिर बैठकर उसे ध्यान से देखने लगा। “मैं तुम्हें चोरु बुलाऊँगी, ठीक है?” ननकी ने आगे कहा। बन्दर बगैर हिले-डुले उसे देखता रहा। जब ननकी ने अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाया तो उसने हल्की-सी ‘चिप’ की आवाज़ निकाली और कूदकर उसकी पहुँच से दूर चला गया।

अगली सुबह ननकी नदी पर गई और खाने के लिए कुछ तलाशने लगी। अब वह चोरु के साथ खाती थी। चोरु भी अब जंगल से मेवे, फूल, फल जैसी चीज़ें ढूँढ़कर लाता और ननकी के साथ बाँटकर खाता।

भोजन के बाद चोरु बैठ जाता और अपने पट्टे को खींचने लगता। कुछ देर कोशिश करने के बाद वह हार मान लेता और फिर अपने बदन से पिस्सू निकालने में लग जाता। खुद को पट्टे से आज़ाद करने में चोरु की नाकामी को देखकर ननकी ने कई बार उसके पास जाकर पट्टे को हटाने की कोशिश की। लेकिन हर बार जब उसका हाथ बन्दर की गर्दन तक पहुँचता, तो वो चिप की आवाज़ करता, अपने दाँत दिखाता और कूदकर पीछे हट जाता।

एक दोपहर ननकी पंखवाले उस मगरमच्छ को निहार रही थी, जिसे उसने अभी-अभी दीवार पर उकेरा था। सोच रही थी कि उसके शल्कों के लिए



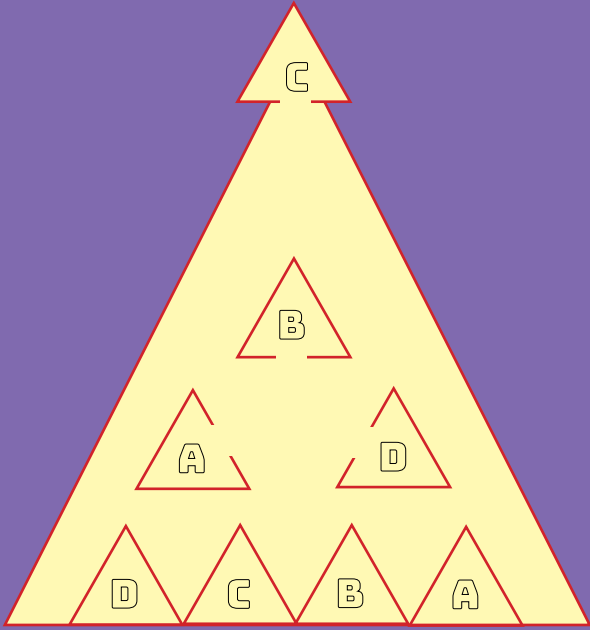
कौन-सा रंग ठीक रहेगा, तभी झुरमुट में से एक कराह सुनाई पड़ी। उसने देखा चोरु लड़खड़ाते हुए आगे आ रहा था, खून से सना और काँपता हुआ। वह धीरे-धीरे ननकी की ओर आया और उसकी बाँहों में सिमट गया। ननकी ने उसे पत्तियों के उस बिछौने पर लिटा दिया, जिस पर वो खुद सोती थी। फिर उसने नदी के पानी से धोकर उसका घाव साफ किया और उस पर मुरझाई हुई नीम की पत्तियाँ लगा दीं। चोरु अब बिलकुल निढाल पड़ा था। इसी का फायदा उठाकर ननकी ने लाल पट्टे के हुक भी खोल दिए। जब उसने उस पट्टे को चोरु की बाजू में रख दिया तो चोरु ने उस पट्टे को अपने कमज़ोर पंजे से छुआ और फिर आँखें मूँद लीं।

पता नहीं चोरु को क्या हुआ था। अब वो ननकी के बुलाने पर नहीं आ रहा था और उसने पूछे गए सवालों के जवाब भी नहीं दिए। पूरी रात ननकी करवट बदलती रही। वैसे तो वह चट्टानों से दूर कभी जाती ही नहीं थी, लेकिन चोरु के ज़ख्मों ने उसे याद दिला दिया था कि जंगल कितना खतरनाक हो सकता है।

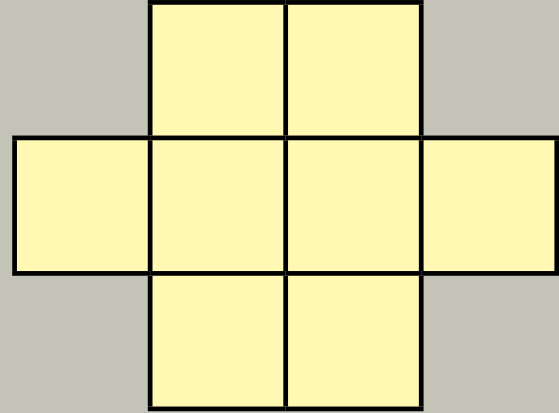
अगले अंक में जारी...



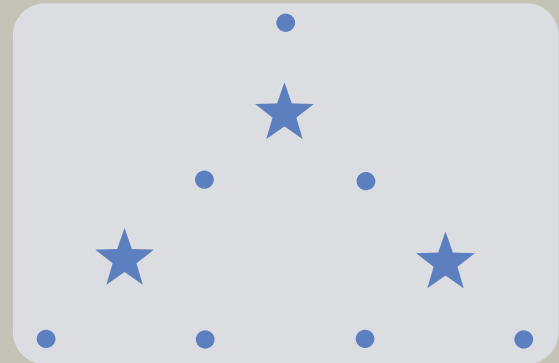
1. दिए गए चित्र में A को A से, B को B से और C को C से मिलाओ, पर तुम्हारी लाइनें एक-दूसरे को काटनी नहीं चाहिए।



2. गिड में 1 से 8 तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि क्रम से आने वाली संख्याएँ किन्हीं भी दो खानों (आड़े, खड़े या तिरछे) में एक साथ ना आएँ।



3. सभी बिन्दुओं को इस तरह जोड़ो कि तीनों सितारे तीन वर्गों के अन्दर आ जाएँ।



4. $8 \dots 2 \dots 4 = 12$

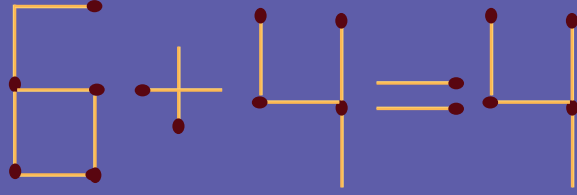
खाली जगहों में जोड़, घटाना, गुणा या भाग का चिह्न भरकर इस समीकरण को सही करो।

5. अहाना ने अपनी दादी से उनकी उम्र पूछी। दादी ने कहा, “मेरे पाँच बच्चे हैं और हर बच्चे के बीच पाँच साल का अन्तर है। जब मेरा पहला बेटा पैदा हुआ तब मैं 20 साल की थी। और अब मेरी सबसे छोटी बेटी खुद 20 साल की है। तो सोचो मेरी उम्र कितनी होगी?” तुमने पता कर ली क्या?

6. दी गई गिड में कई सारे राजा-रानियों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

अ	हि	ल्या	बा	ई	हु	मा	यूँ	दु
शो	पृ	शि	रु	द्र	मा	दे	वी	र्गा
क	थ्वी	वा	र	खि	कृ	ष्ण	दे	व
इ	रा	जी	क	ज़ि	ल	मा	टी	ती
ब्रा	ज	हाँ	गी	र	या	जी	पू	पो
हि	चौ	अ	क	ब	र	सु	सु	र
म	हा	रा	णा	प्र	ता	प	ल्ता	स
लो	न	ल	क्ष्मी	बा	ई	वि	न	न
दी	चं	द्र	गु	स	चाँ	द	बी	बी

7. केवल एक तीली को इधर-उधर करके दिए गए समीकरण को सही करो।

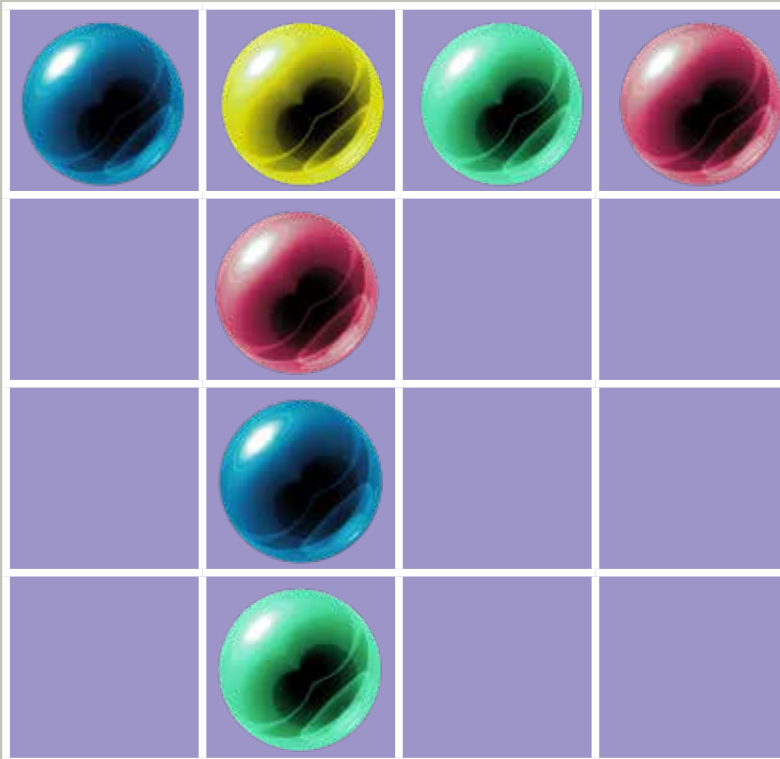


8. कौन-सी आइसक्रीम बाकियों से अलग है?



9. नैसी एक थैले में ककड़ियाँ लेकर जा रही थी। साहिल भी पाँच थैले लेकर जा रहा था। दोनों के थैले बराबर माप के थे। फिर भी नैसी का थैला साहिल के थैलों से दोगुना भारी था। ऐसा क्यों?

10. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग कंचा आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा कंचा आएगा?



माथा पच्ची

फटाफट बताओ

एक सींग की ऐसी गाय
जितना दो उतना ही खाए
खाते-खाते गाना गाए
पेट ना उसका भरने पाए
(किफ)

बिना हाथ-पैर के
चल के न तैर के
सब के घर चली जाऊँ
बिना किसी बैर के
(डिग)

सोने की वह चीज़ है
पर बिके न हाट सुनार
हल्की-फुल्की भी नहीं
कई किलो है भार
(झाग्रा)

कौन-सी चीज़ है जो है तो
सबके पास, पर कोई उसकी
कीमत नहीं बता सकता?
(मम)

एक धनुष है सबको भाता
मगर लड़ने के काम न आता
(धनुष)

कमर बाँध कोने में खड़ी
सबको ज़रूरत इसकी पड़ी
(झाड़)

गर्मी की छुट्टियों के मजे

द्युति

छठवीं, फातिमा स्कूल
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मैं हर साल गर्मी की छुट्टियों में अपने नानाजी के घर जाती हूँ। वहाँ पर मेरे मामा और मौसी के बच्चे भी मिलते हैं। हम लोग ज़्यादातर समय नानाजी के बाग में रहते हैं। वहाँ पर हम झूला झूलते हैं और पेड़ों पर चढ़कर आम तोड़ते हैं। मैं ज़्यादातर आम बँटोरती हूँ या किताबें पढ़कर सबको कहानी सुनाती हूँ। मैं किताबें अपने घर से लेकर जाती हूँ। और हम सब बाग में ही कहानियाँ पढ़ते हैं और गीत गाते हैं। हम सब पास के तालाब में नहाते भी हैं।



रुकमक

36

अगस्त 2025

चित्र: द्युति, छठवीं, फातिमा स्कूल, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पापा

तेजस

पाँचवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल
ग्राम पाड़ा, करनाल, हरयाणा

जैसे सिमकार्ड के बिना
मोबाइल नहीं चल सकता
ठीक वैसे ही मेरे पापा के बिना
मैं नहीं चल सकता



रात रानी होटल

आकाश सिंह

पाँचवीं, दीपालया, होल्डिंग हैड
प्रोजेक्ट, दिल्ली

अभिमन्यु नाम का एक लड़का था। उसने और उसके दोस्तों ने सोचा कि चलो कहीं घूमने चलते हैं। वो पाँच लोग थे – अभिमन्यु, राकेश, रोहित, राधिका और रिया। फिर उन्होंने ट्रिप में जाने के लिए जगह चुनी – पेरियार राष्ट्रीय पार्क। और निकल पड़े। उस समय शाम के 4 बज रहे थे।

अभी वो सब महाराष्ट्र में आ गए थे। उस वक्त रात के 10 बज रहे थे। अभिमन्यु ने कहा कि हमें होटल में रुकना चाहिए। वैसे भी रात काफी हो गई है। तभी उन्हें एक होटल दिखा। वह सब अन्दर घुस गए। उस होटल का नाम था रात रानी होटल।

होटल में घुसकर सब कहते हैं कि ये होटल तो अन्दर और बाहर दोनों तरफ से सुन्दर है। फिर उन्होंने स्टाफ से अपने-अपने कमरे की चाबी ली और कमरे में चले गए। रिया और राधिका का एक ही कमरा था। और उन तीनों का भी एक ही कमरा था। रिया ने राधिका से कहा कि मैं नहाने जा रही हूँ। लेकिन नल में पानी नहीं आ रहा है। राधिका ने कहा, “अरे! वो देख, नल से तो खून आ रहा है। बचाओ, बचाओ, कोई तो बचाओ!” वो चिल्लाने लगीं।

फिर वो सब कभी नहीं दिखे। कहते हैं कि रात रानी होटल जब बन रहा था तो बहुत सारे एक्सीडेंट हुए थे। जब वो होटल बन गया तो होटल में अजीबोगरीब चीजें होने लगीं। फिर उस होटल को दो महीने बाद बन्द कर दिया गया। उन्होंने जिस स्टाफ से चाबी ली थी, वो भूत था।



चित्र: रणदीप काकडे, आठवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मशरूम और तितली

कशिश
तीसरी, राजकीय
प्राथमिक स्कूल
बुलन्द शहर
उत्तर प्रदेश

एक दिन मैंने दो मशरूम देखे। एक मशरूम बड़ा था और एक छोटा था। और वो दोनों मशरूम पास-पास लगे थे। बड़े मशरूम पर तितली बैठी थी। यह सब देखने में बहुत सुन्दर लग रहा था। मैंने उसका चित्र बनाया। मुझे उसका चित्र बनाने में पूरा एक दिन लग गया। अब मैंने अपना चित्र कॉपी में रख रखा है।



चित्र: रनवीर और रवीना, दूसरी, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

कोयल की कू-कू

दीपक बोहरा
तीसरी, विद्या विकास हाई स्कूल
बेंगलूरु, कर्नाटका

मैंने कोयल को सिर्फ किताबों में देखा है। उसके बारे में पढ़ा है और कभी-कभी यूट्यूब शॉर्ट्स में सुना है कि वो “कू-कू” करती है। मेरे भैया कहते हैं कि अब शहरों में चिड़ियाँ बहुत कम हो गई हैं। इसलिए हमें कोयल नहीं दिखती।

एक दिन सुबह-सुबह मैं सड़क पर साइकिल चला रहा था। मैंने देखा कि एक काली-सी चिड़िया हमारे घर के सामने स्ट्रीटलाइट पर बैठी थी। मैंने मम्मी को बुलाया और पूछा, “ये कौन-सी चिड़िया है?” मम्मी बोलीं, “ये कोयल है।”

मैं बहुत खुश हो गया और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाया, “कू, कू, कू!” लेकिन चिड़िया कुछ न बोली। मैंने फिर से कहा, “कू, कू, कू!” वह फिर भी चुप रही।

सब कहते हैं कोयल से कू, कू करो तो वह जवाब देती है। लेकिन इस चिड़िया ने तो कुछ भी नहीं कहा। मैं कैसे मान लेता कि वह कोयल ही है?

माँ के बचपन की कहानी

अविश रमन
सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाढ़ा, करनाल, हरयाणा

मेरी माँ सारा दिन काम में लगी रहती हैं। एक दिन मैंने सोचा कि मैं अपनी माँ के पास बैठूँ और उनसे उनके बचपन की कोई कहानी सुनूँ। तब मेरी माँ ने बताया कि बचपन में उनका भाई बहुत शरारती था। एक बार मेरी माँ नीम के पेड़ के नीचे झूला झूल रही थीं। तभी मेरे मामा ने पीछे से आकर इतनी जोर-से झूला दिया कि मेरी माँ 360 डिग्री घूम गई और नीचे गिर गई। माँ को ज़्यादा चोट नहीं आई। मेरी माँ ने मेरी नानी को बताया। और तभी मेरे मामा को मेरी नानी ने उसी पेड़ पर उलटा लटका दिया। ये थी मेरी माँ के बचपन की कहानी।

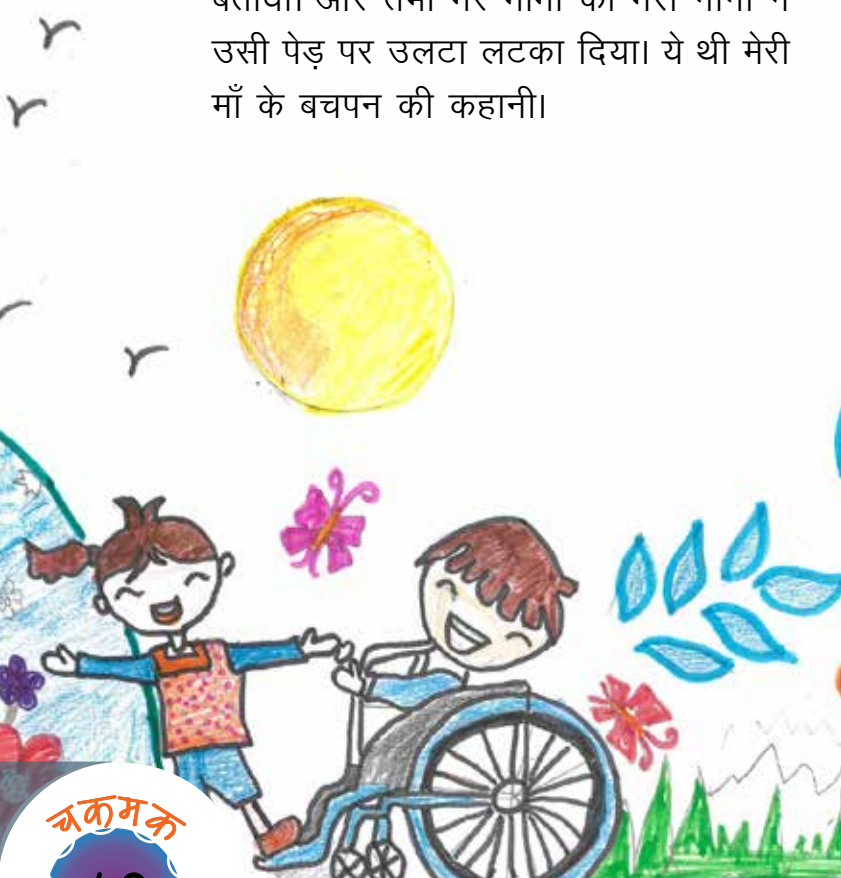
एक बार की बात है। एक कुत्ता था। वह सो रहा था। उसका नाम टप्पू था। वह सोकर उठा तो उसकी पीठ पर बैंगनी कलर का धब्बा लगा हुआ था। कुत्ता बोला, “किसने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?” ऊपर सूरज था। उससे कुत्ता पूछने लगा, “सूरज-सूरज क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?” सूरज बोला, “हरगिज़ नहीं।” कुत्ते ने बादल से कहा, “क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?” बादल ने कहा, “बिल्कुल नहीं।”

फिर कुत्ते ने गुब्बारे से कहा, “क्या तुमने दिए मुझे बैंगनी धब्बे?” “नहीं मैं तो लाल हूँ।” गुब्बारे ने कहा। बेचारा टप्पू उदास हो गया और पेड़ के पास बैठकर सोचने लगा कि आखिर किसने दिए मुझे बैंगनी धब्बे? अचानक से उसे याद आया कि अरे यह तो जामुन था। टप्पू खुश हो गया और वापिस अपने घर की ओर चला गया।

बैंगनी धब्बे

जान्हवी
पहली, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
शंकरदाह, धमतरी, छत्तीसगढ़

चित्र: वंशिका, आठवीं, विश्वास विद्यालय, गुरुग्राम, हरयाणा





चित्र: तेजस, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, पाड़ा, करनाल, हरयाणा

शेर का मोबाइल

कृष्ण
समूह उजाला
दिगन्तर विद्यालय
जयपुर, राजस्थान

एक गाँव था। उस गाँव में एक पेड़ था। पेड़ पर एक बन्दर रहता था। बन्दर का दोस्त शेर था। शेर के पास एक मोबाइल था। एक दिन तेज़ बारिश हुई, जिससे शेर का फोन गीला हो गया। रात भी बहुत हो गई थी। इसलिए शेर गुफा का दरवाज़ा खोलकर अन्दर आ गया। दूसरे दिन बन्दर अपने दोस्त के लिए नया मोबाइल लाया। शेर ने खुशी मनाई और केक काटा। कुछ दिनों बाद उन्होंने वीडियो बनाकर यूट्यूब पर डालें। उनके दो लाख सब्सक्राइबर हो गए। उन्होंने फिर से मिलकर केक काटा और खूब डांस किया।

अ	हि	ल्या	बा	ई	हु	मा	यूँ	दु
शो	पृ	शि	रु	द्र	मा	दे	वी	र्गा
क	ध्वी	वा	र	खि	कृ	ष्ण	दे	व
इ	रा	जी	क	ज़ि	ल	मा	टी	ती
ब्रा	ज	हाँ	गी	र	या	जी	पू	पो
हि	चौ	अ	क	ब	र	सु	सु	र
म	हा	रा	णा	प्र	ता	प	ल्ला	स
लो	न	ल	क्ष्मी	बा	ई	वि	न	न
दी	चं	द्र	गु	स	चाँ	द	बी	बी

2.

	5	3	
2	8	1	7
	6	4	

5.

दादी का पहला बच्चा 20 साल की उम्र में हुआ था और हर बच्चे के बीच 5 साल का अन्तर है। इस हिसाब से उनका दूसरा बच्चा 25 साल में, तीसरा 30 साल में, चौथा 35 साल में और पाँचवाँ बच्चा 40 साल की उम्र में हुआ। अब उनकी सबसे छोटी बेटी 20 साल की है, तो दादी की उम्र हुई $40 + 20 = 60$

The diagram shows a 2x2 grid of points on the left. An arrow points from this grid to a cross-shaped configuration of points in the middle. To the right of the cross is an equals sign, followed by two L-shaped configurations of points. This illustrates how a 2x2 grid can be decomposed into a cross and two L-shapes.

8.

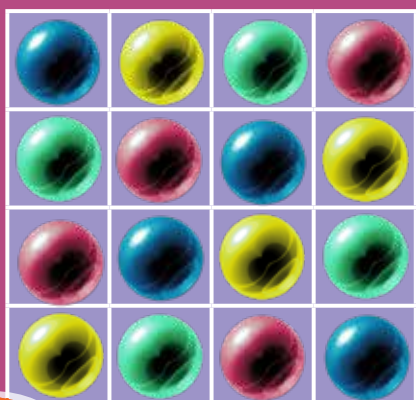
2 नम्बर वाली।



9.

क्योंकि साहिल के तैले खाली थे।

10.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



सूडोकू-87 का जवाब

9	2	3	5	6	1	4	8	7
1	7	5	2	4	8	3	6	9
6	4	8	7	3	9	2	5	1
5	9	4	1	8	7	6	3	2
3	6	1	4	5	2	7	9	8
7	8	2	6	9	3	1	4	5
4	5	7	9	2	6	8	1	3
8	1	9	3	7	4	5	2	6
2	3	6	8	1	5	9	7	4

तुम भी जानो

भारत के पहले अन्तरिक्ष यात्री ग्रुप कैप्टन शुभांशु शुक्ला 20 दिन के अन्तरिक्ष मिशन के बाद जुलाई में पृथ्वी पर लौटे। इनमें से 18 दिन उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय अन्तरिक्ष स्टेशन में बिताए, जो कि एक कृत्रिम उपग्रह है। वहाँ उन्होंने सूक्ष्म गुरुत्वाकर्षण (microgravity) पर भारत और अमेरिका के लिए कई प्रयोग किए। 1984 में विंग कमांडर राकेश शर्मा के बाद शुभांशु शुक्ला दूसरे ऐसे भारतीय हैं जिन्होंने अन्तरिक्ष की यात्रा की है। अन्तरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण इतना कम होता है कि व्यक्ति भारहीन महसूस करता है। इसलिए वहाँ अपनी गति को नियंत्रित करना कठिन होता है। शुभांशु ने भी कहा कि अन्तरिक्ष में स्थिर रहना उनके लिए बहुत चुनौतीपूर्ण था।

300 से ज़्यादा बार पृथ्वी की परिक्रमा करने वाले यात्री



बलगम से मिलते हैं सेहत के सुराग



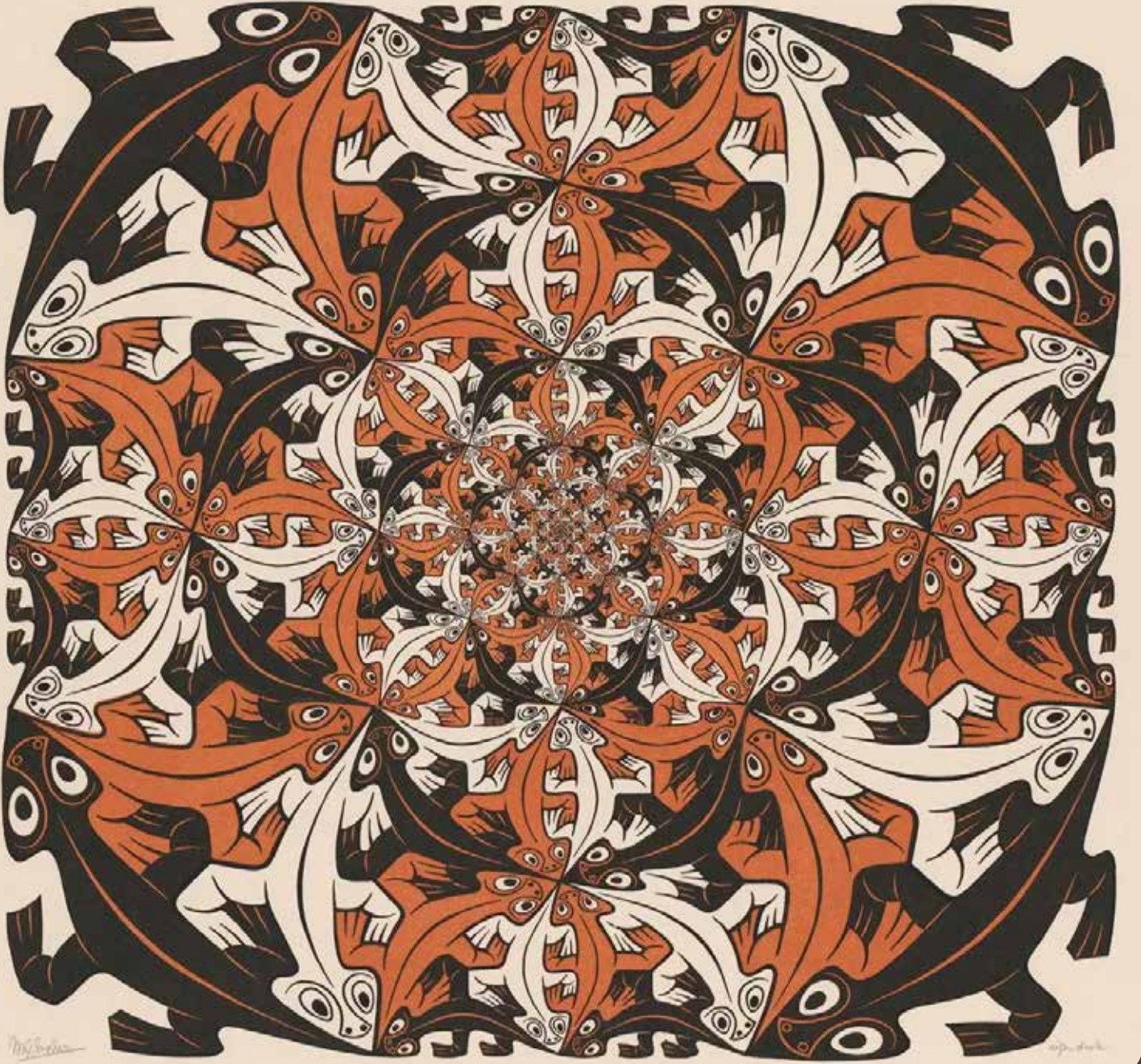
जैसे पेट से लेकर आँतों तक के सूक्ष्मजीव हर व्यक्ति में अलग और यूनिक होते हैं, वैसे ही हर व्यक्ति का बलगम भी अलग होता है। इसका रंग, घनापन और बनावट सभी हमारे प्रतिरक्षा तंत्र (Immune system) की स्थिति के बारे में कुछ ना कुछ बताते हैं। वैसे तो एक वयस्क व्यक्ति में लगभग 100 मिलीलीटर बलगम रोज़ बनता है, लेकिन बच्चों में यह थोड़ा ज़्यादा ही बनता है। अब वैज्ञानिक स्वस्थ बलगम के गुणों के बारे में जानने की कोशिश कर रहे हैं। इससे वे ऐसी दवाइयाँ या खास नेज़ल स्प्रे बना पाएँगे जो बीमारियों के समय बलगम को स्वस्थ बनाए रख सकें।

झूँक

चकमक

43

अगस्त 2025



छिपकली

‘दिग्गज’ मुरादाबादी
चित्र: एम सी एशर

अरी छिपकली, चिपक रही है
तू जो इस दीवार पर
मान न मान नज़र है तेरी
अब भी किसी शिकार पर।
दबे पाँव बढ़ना, फिर रुकना
कोई ऊँची घात है

एक झपट्टे में शिकार पर
वाह-वाह क्या बात है!
कैसे साधे अरी निशाना
हमको भी सिखला दे
या जिससे सीखा है तूने
उसका पता बता दे।



कुकुमक

44

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन